

ओम संवित्-देव्यै नमः
धर्माचार्य विरचिता

श्री पञ्चस्तवी

मूल, पदच्छेद तथा रोमनलिपि

संशोधक एवं सम्पादक
पण्डित जानकीनाथ कौल 'कमल'

श्रीरामकृष्ण आश्रम
शिवालय, करणनगर
श्रीनगर (काश्मीर) 190010

ओम संवित्-देव्यै नमः
धर्माचार्य विरचिता

श्री पञ्चस्तवी

मूल, पदच्छेद तथा रोमनलिपि

संशोधक एवं सम्पादक
पण्डित जानकीनाथ कौल 'कमल'

श्रीरामकृष्ण आश्रम

शिवालय, करणनगर
श्रीनगर (काश्मीर) 190010

प्रकाशक

मन्त्री, श्रीरामकृष्ण आश्रम
शिवालय, करणनगर, श्रीनगर (काश्मीर)

© सम्पादक १९९७

मूल्य : रु. ४०/-

प्राप्तिस्थान:-

1. 'शान्ति कुटीर'
३७/४ पण्डोका कालोनी
पलौरा, जम्मू - १८११२१
2. ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
महेन्द्रनगर, जम्मू - २
3. उत्पल पब्लिकेशन्स
आर-२२, खनेजा कॉम्पलेक्स,
मैन मार्किट, शकरपुर, दिल्ली- ९२

विषय सूची

	पृष्ठ
प्रकाशक का वक्तव्य	 5
भूमिका	 7
लघुस्तवः	 13
चर्चस्तवः	 35
घटस्तवः	 67
अम्बस्तवः	 91
सकलजननीस्तवः	 123

1777-1778

1777

1778

1779

1780

1781

1782

1783

1784

1785

1786

1787

1788

1789

1790

1791

1792

1793

प्रकाशक का वक्तव्य

वृद्ध महानुभावों से सुनते आये हैं कि सकल जगत् की माता महामाया भगवती त्रिपुरसुन्दरी अपने भक्तों की पुकार सुनने के लिए सदा उत्सुक रहती हैं। इस तथ्य का उदाहरण हमें संसार में व्यक्तिगत व्यवहार में भी मिलता है। कौन ऐसी माता है जो अपनी सन्तान के प्रति वात्सल्य भाव में द्रवित न हो ! सन्तान कैसी भी हो, माता का निरपेक्ष प्रेम उसकी ओर उमड़ पड़ता है जब भी वह मातृ-चरण के पास आये। इस तथ्य का अनुभव सन्तान को तब ही होता है जब उसे चरण-स्पर्श प्राप्त हुआ हो। चित्तशुद्धि का यह महान् रहस्य है।

जो सज्जन जगन्माता चित्-शक्ति के अनुग्रह का पात्र बन गया हो उसे बार-बार हमारा नमस्कार। ऐसे ही कई भक्त-जनों के आग्रह से पञ्चस्तवी का शुद्ध पाठ जन-साधारण के लिए सुलभ बनाने का यह प्रयास प्रस्तुत है। श्लोकों को मोटे टाइप में दिया है। पदच्छेद और रोमन लिपि, मूल-पाठ को शुद्ध शब्दों में उच्चारण करने के लिये दिये गए हैं। श्लोकों का शुद्ध पाठ कण्ठस्थ होने पर श्लोक-अर्थ समझना सुगम होगा। अतः नित्य-पाठ करना पहली आवश्यकता है। महामाया भगवती शारदा सब को सद्बुद्धि दें और सत्कर्म की ओर प्रेरित करें।

(प्र०) ब्रिजनाथ कौल

THE HISTORY OF THE

... and the ...
... the ...
... the ...
... the ...
... the ...
... the ...

... the ...
... the ...
... the ...
... the ...
... the ...
... the ...

... the ...

भूमिका

श्री पञ्चस्तवी में पराभट्टारिका भगवती त्रिपुरसुन्दरी के स्वरूप-विकास में स्वरूप-संकोचात्मक पंचकृत्य की क्रमपूर्वक स्तुति की गई है। इसके अब्धुत भक्ति-स्तवों में कुण्डलिनी योग के चमत्कारिक रहस्यों का युक्तिपूर्वक वर्णन किया गया है। ऐसे गहन विषय को केवल शब्दार्थ द्वारा नहीं अपितु लक्ष्यार्थ को लेकर, विशेषकर व्यङ्ग्यार्थ में, समझना आवश्यक है। यदि इन श्लोकों के रहस्यार्थ (सूक्ष्म अर्थ) का अवगहन शाक्तक्रम के अनुसार नहीं हो तो अनर्थ का भय होता है। सम्भवतः इसी लिये विज्ञानों ने रहस्यार्थ का विश्लेषण सर्व-साधारण जन के लिये करना नहीं चाहा है। वे इस स्तव-रत्न का श्रद्धा-भक्ति पूर्वक नित्य पाठ करने पर ही अधिक बल देते रहे हैं।

पञ्चस्तवी का प्रचार विशेषकर कश्मीर घाटी में और दक्षिण भारत के कई प्रान्तों में प्राचीनकाल से प्रचलन में रहा है। भक्ति-भाव से इसके सुरीले श्लोकों का केवल पाठ करने से ही मन को अपूर्व आह्लाद मिलता है। अर्थ का अनुभव करते हुये इसका पाठ करने मात्र से इच्छित फल की प्राप्ति होती है, ऐसी श्रद्धालु विद्वज्जन की धारणा है। शाक्त-परामर्श से अनुग्रह-प्राप्त साधक को इसका अर्थ-गाम्भीर्य अवगत होने पर उसे पारमार्थिक चरवणानन्द की चरम सीमा अर्थात् परमशिव के अद्वयानन्द अथवा सायुज्य मुक्ति का लाभ मिलता है, जो मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। काश्मीर मण्डल के प्रसिद्ध विद्वद्गुरु दिवंगत पण्डित हरभट्ट

शास्त्री (1874-1951 ई०) ने पञ्चस्तवी की 'हरभट्टी' नाम से संस्कृत टीका लिखी है। यद्यपि इसे आवश्यकता से अधिक विस्तार में लिखा गया है तथापि सुविज्ञ टीकाकार ने वेद, तन्त्र, पुराण तथा शैव-शाक्त शास्त्रों से विशद उद्धरण देकर रहस्यार्थ का बहुत मात्रा में निर्देशन किया है। परन्तु खेद है कि काश्मीर राजकीय 'रिसर्च' कार्यालय ने महामहिम टीकाकार के मरणोपरान्त पांचों स्तवों पर उनकी टीका का मुद्रण कर केवल तीन स्तवों को प्रकाशित किया है। टीका की प्रस्तावना महामहिम श्रीमत् वाग्भवाचार्य ने लिखी है। इस प्रस्तावना के आधार पर श्री पञ्चस्तवी के महत्व, समय-निर्धारण तथा रचयिता के विषय में लिखना सर्वसाधारण के लिये भी लाभकारी होगा।

पञ्चस्तवी का महत्व

भारतीय वाङ्मय में स्तोत्र साहित्य की बहुत महिमा है। श्रीविद्या सम्बन्धी स्तोत्रों में ब्रह्माण्ड पुराणान्तर्गत 'श्री ललितासहस्रनाम' तथा 'ललितात्रिशतीस्तोत्र', भगवान् दुर्वासा का 'श्रीत्रिपुरामहिमा-स्तोत्र' तथा श्रीललितास्तवरत्न', रुद्रयामल तन्त्रान्तर्गत 'श्री भवानीनामसहस्रस्तुति', मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत 'दुर्गासप्तशती', श्री गौडपादाचार्य का 'सुभगोदय', श्री शङ्कराचार्य की 'श्रीसौन्दर्यलहरी', श्रीधर्माचार्य की 'श्रीपञ्चस्तवी' और श्री मूककविसार्वभौम की 'मूकपञ्चस्तवी' आदि बड़े महिमा वाले स्तोत्र माने गये हैं। इनमें से अत्यन्तमहत्वपूर्ण तथा सारगर्भित पञ्चस्तवी अधिक लोकप्रिय बनी। इसमें स्तोत्र-शास्त्र के छःहों लक्षण विद्यमान हैं। सारांश में वे हैं- 1) आशीर्वाद 2) सिद्धान्त 3) पराक्रम 4) विभूति 5) नमस्कार और 6) प्रार्थना। बहुत समय पहले

पञ्चस्तवी का मूल-मात्र मुद्रण में आया था। तत्पश्चात् लघुभट्टाचार्य के नाम से केवल लघुस्तव की संस्कृत टीका प्रकट हुई। समयान्तर में और भी टीकाएं हुई हों परन्तु 'हरभट्टी' टीका सब से बढ़कर रही। यह 1960-1963 ई० में आंशिक रूप में प्रकाशित हुई और वाग्भवाचार्य ने इस की बड़ी प्रशंसा की। आधुनिक काल में भी पञ्चस्तवी के अनुवाद अथवा रूपान्तरण हिन्दी, अंग्रेजी, कश्मीरी तथा अन्य भाषाओं में छप चुके हैं। इसका प्रचार अधिक बढ़ रहा है।

पञ्चस्तवी का एक लोकप्रिय श्लोक 'मायाकुण्डलिनी क्रिया मधुमती' (स्तव १, श्लो० १८) आजकल भी उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशों में विजया भगवती के महोत्सव पर सहस्रों पण्डितों तथा उनके पुत्रों द्वारा पढ़ा जाता है। काश्मीर का मूर्ख ब्राह्मणबालक भी इस श्लोक का पाठ करता मिलता है। यहाँ के पण्डित लोग कहीं भी हों, पञ्चस्तवी के पाठ श्रद्धाभाव से शाक्त पर्वों पर अथवा दैनिक क्रम से करते हैं। प्रायः सब विचारों के लोग इस भक्ति-योग पूर्ण शास्त्र की ओर आकर्षित रहते हैं।

पञ्चस्तवी का रचनाकाल

संस्कृत साहित्य के सफल अध्ययन से पता चलता है कि महाराजा भोज, आचार्य मम्मट, माधवाचार्य, अप्ययदीक्षित आदि ने अपने अपने सुप्रसिद्ध काव्यग्रन्थों में पञ्चस्तवी के पद्य तथा पद्यांशों का उल्लेख किया है। यह बात प्रमाणित है कि उनमें से प्रथम श्री भोज महाराज सं० १०५० तदनुसार 992 ई० तक जीवित थे। अतः पञ्चस्तवी का रचनाकाल सातवीं-आठवीं शताब्दी के

आस-पास ही माना जाता है। आद्यशङ्कराचार्य (788-820 ई०) ने अपनी किसी कृति में पञ्चस्तवी से कोई उद्धरण नहीं दिया है। इससे इस स्तव-पञ्चक के निर्धारित रचनाकाल के विषय में पुष्टि होती है।

पञ्चस्तवी के रचयिता

श्री विद्यारण्य तथा श्री नित्यानन्दनाथ ने अपने ग्रन्थों में पञ्चस्तवी से उद्धरण लेकर उनको श्री धर्माचार्य विरचित बताया है। इनसे पूर्वकाल के विद्वानों को यह स्पष्ट नहीं हो सका था कि इस अत्युत्तम शाक्त ग्रन्थ के रचयिता कौन हैं। महाविद्वान लक्ष्मीधर ने इसे कालिदास की कृति माना तो कश्मीर के विद्वान पण्डित नाथराम शास्त्री ने अभिनवगुप्त की। कई विद्वानों ने इस के प्रणेता श्री शङ्कराचार्य माने हैं। परन्तु शोध के आधार पर कुछ और ही परिचय मिलते हैं। इसके अतिरिक्त श्री नित्यानन्द ने 'त्रिपुरामहिमास्तोत्र' की व्याख्या तथा लघुस्तव की टीका में पञ्चस्तवी के प्रणेता धर्माचार्य का ही स्मरण किया है। श्रीमत् वाग्भवाचार्य ने 1950 ई० में पञ्चस्तवी का पाठ-मात्र प्रकाशित किया जिसकी प्रस्तावना में उन्होंने धर्माचार्य को ही स्वीकृत किया है। उनका कहना है कि जीवनकाल में ही पण्डित हरभट्ट शास्त्री ने उनसे इस विषय में सहमति प्रकट की थी। शैवाचार्य ईश्वरस्वरूप श्री स्वामी लक्ष्मण जुव ने भी इस मान्यता का अनुमोदन किया।

अस्तु, श्री पञ्चस्तवी का तात्पर्य अर्थ तभी सुगमता से समझा जा सकता है जब इसका शुद्ध पाठ कण्ठस्थ किया गया हो। यह भी सत्य है कि नाना प्रकार

के मन-मोहक छन्दों तथा रोचक अलंकारों से सुसज्जित इन श्लोकों का विधिवत् पाठ करने से उनके गम्भीर अर्थ बहुत मात्रा में साधक के मस्तिष्क में स्वयं स्पष्ट होते हैं । इसी अभिप्राय से इस पुस्तिका में शुद्ध पाठ के साथ पदच्छेद तथा रोमन भाषा में श्लोक दिये हैं जिससे संस्कृत का थोड़ा भी ज्ञान रखने वाले इच्छुक जन परिश्रमपूर्वक इसका शुद्ध पाठ कर सकेंगे । रहस्यार्थ समझने के लिये यह प्रयत्न सफल तथा स्थायी रहेगा । केसेट-पाठ का अनुकरण करने से यह सुगमता सम्भव नहीं ।

जानकीनाथ कौल 'कमल'

ज्येष्ठ पूर्णिमा,
अलक्षेश्वरी रूपभवानी जयन्ती,
*जून १, १९९६

ॐ

अथ लघुस्तवः प्रथमः नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्तिमनुष्णागोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहस्थिता
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

ऐन्द्रस्य इव शर-आसनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्तिम् अनुष्णागोः इव शिरसि आतन्वती सर्वतः।
एषा असौ त्रिपुरा हृदि द्युतिः इव उष्णांशोः सदा अहः स्थिता
छिन्द्यात् नः सहसा पदैः त्रिभिः अघं ज्योतिः-मयी वाङ्-मयी ॥१॥

1. aindrasyeva śarāsanasya dadhatī madhye lalāṭam prabhām
śauklīm kāntimanuṣṇagoriva śirasyātanvatī sarvataḥ;
eṣā'sau tripurā hr̥di dyutirivoṣṇāṁśoḥ sadāhasthitā
chindyānnah sahasā padaistribhiragham jyotirmayī vāṁmayī.

या मात्रा त्रपसीलतातनुलसत्तन्तूत्थिति स्पर्धिनी
 वाग्बीजे प्रथमेस्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम्।
 शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
 ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

या मात्रा त्रपसी लता तनु लसत् तन्तु उत्थिति स्पर्धिनी
 वाक् बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम्।
 शक्तिः कुण्डलिनी इति विश्व-जनन व्यापार बद्ध उद्यमा
 ज्ञात्वा इत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी गर्भे अर्भकत्वं नराः ॥२॥

2. yā mātṛā trapasīlatā tanulasat tantūt-thiti spardhinī
 vāgbīje prathamē -sthitā tava sadā tām manmahe te vayam;
 śaktiḥ kuṇḍalinīti viśvajanaṇa vyāpāra badhodyamā
 jñātvetham na punah spraśanti Jananī garbhē'rbhakatvam narāḥ.

दृष्ट्वा संभ्रमकारिवस्तु सहसा ऐ ऐ इति व्याहृतम्
येनाकूतवशादऽपीह वरदे ! बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि ! तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचः सूक्तिसुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ॥३॥

दृष्ट्वा सं-भ्रमकारि वस्तु सहसा ऐ ऐ इति व्याहृतं
येन आकूत-वशात् अपि इह वरदे ! बिन्दुं विना अपि अक्षरम्।
तस्य अपि ध्रुवम् एव देवि ! तरसा जाते तव अनुग्रहे
वाचः सूक्ति-सुधा-रस-द्रवमुचः निर्यान्ति वक्त्र अम्बुजात् ॥३॥

3. dṛṣṭvā sambhramakāri vastu sahasā ai ai iti vyāhṛtam
yenākūtavaśāda'piha varade ! binduṁ vināpyakṣaram;
tasyāpi dhruvameva devi! tarasā jāte tavānugrahe
vācaḥ sūktisudhārasadravamuco niryānti vaktrambujāt.

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलम्
 तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
 आख्यानं प्रतिपर्व सत्यतपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
 प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम्॥४॥

यत् नित्ये ! तव काम-राजम् अपरं मन्त्र अक्षरं निष्कलं
 तत् सारस्वतम् इति अवैति विरलः कश्चिद् बुधः चेत् भुवि।
 आख्यानं प्रति पर्व सत्य-तपसः यत् कीर्तयन्तः द्विजाः
 प्रारम्भे प्रणव आस्पद प्रणयितां नीत्वा उच्-चरन्ति स्फुटम् ॥४॥

4. yannitye tava kāmārājamaparam mantrākṣaram niṣkalam
 tat sārāsvatamityavaiti viralah kaścidbudhaścedbhuvi;
 ākhyānam pratiparva satyatapasas yatkīrtayanto dvijāḥ
 prārambhe praṇavāspada praṇayitām nītvoccaranti sphuṭam.

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्टप्रभावं बुधैः
 तार्तीयिकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दुप्रभम्।
 अस्त्वौर्वोपि सरस्वतीमनुगतो जाड्यामबुविच्छित्तये
 गौः शब्दो गिरि वर्तते सनियतं योगं (यो गं) विना सिद्धिदः ॥५॥

यत् सद्यः वचसां प्रवृत्ति-करणे दृष्ट-प्रभावं बुधैः
 तार्ती-यीकम् अहं नमामि मनसा त्वत् बीजं इन्दु प्रभम्।
 अस्तु और्वः अपि सरस्वतीम् अनुगतः जाड्य-अम्बु विच्छित्तये
 गौ शब्दः गिरि वर्तते स नियतं यो गं विना सिद्धिदः ॥५॥

5. yatsadyo vacasām pravṛttikaraṇe dṛṣṭaprabhāvam budhaiḥ
 tārtīyīkamaham namāmi manasā tvaṭbījaminduprabham;
 astvaurvopi sarasvatīm'nugato jāḍyāmbuvicchittaye
 gauḥ- śabdo giri vartate sanīyatam yogam (yo gam) vinā siddhidah .

एकैकं तव देवि ! बीजमनघं सव्यञ्जनाव्यञ्जनं
 कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
 यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
 जप्तं वा सफली करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

एक एकं तव देवि! बीजम् अनघं स-व्यञ्जन अव्यञ्जनं
 कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद् वा स्थित व्युत्-क्रमात्।
 यं यं कामम् अपेक्ष्य येन विधिना केन अपि वा चिन्तितं
 जप्तं वा सफली करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

ekaikam tava devi ! bijamanagham savyañjanāvyañjanam
 kūṭastham yadi vā pṛthak kramagatam yadvā sthitam vyutkramāt;
 yam yam kāmamapekṣya yena vidhinā kenāpi vā cintitam
 japtam vā saphalī karoti tarasā tam tam samastam nṛṇām .

वामे पुस्तकधारिणीमभयदां साक्षस्त्रजं दक्षिणे
 भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम्।
 उज्जृम्भाम्बुजपत्रकान्त नयनस्निग्ध प्रभालोकिनीं
 ये त्वामम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥७॥

वामे पुस्तक धारिणीम् अभय-दां साक्ष-स्त्रजं दक्षिणे
 भक्तेभ्यो वरदान-पेशल-करां कर्पूर कुन्द उज्ज्वलाम्।
 उज्जृम्भ अम्बुज पत्र कान्त-नयन स्निग्ध-प्रभा लोकिनीम्
 ये त्वाम् अम्ब! न शील-यन्ति मनसा तेषां कवि-त्वं कुतः ॥७॥

7. vāme pustakadhāriṇīmabhayadām sākṣasrajam dakṣiṇe
 bhaktebhyo, varadānapeśalakarām karpūra kundojjvalām;
 ujjrambhāmbujapatrakāntanayana snigdhaprabhālokinīm
 ye tvāmamba na śīlayanti manasā teṣām kavitvam kutaḥ .

ये त्वां पाण्डुरपुण्डरीकपटलस्पष्टाभिराम प्रभां
 सिञ्चन्तीममृतद्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
 अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्यान्ति वक्त्राम्बुजा-
 तेषां भारति! भारती सुरसरित्कल्लोललोलोर्मिवत् ॥८॥

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीक पटल स्पष्ट अभिराम प्रभां
 सिञ्चन्तीम् अमृत-द्रवैः इव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
 अश्रान्तं विकट स्फुट अक्षर पदा निर्यान्ति वक्त्र अम्बुजात्
 तेषां भारति! भारती सुर-सरित् कल्लोल लोल ऊर्मिवत् ॥८॥

8. ye tvām pāṇdurapuṇḍarīkapāṭalaspastābhirāma prabhām
 siñcantīm-amṛtadravairiva śīro dyāyanti mūrdhni sthitām;
 aśrāntam vikaṭasphuṭākṣarapadā- niryānti, vaktrāmbhujāt
 teṣām bhārati ! bhārati surasarit kallolalolormivat .

ये सिन्दूरपरागपुञ्जपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमा-
मुर्वीचापि विलीनयावकरसप्रस्तारमग्रामिव।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्यमनसस्तेषामनङ्गज्वर-
क्लान्तात्रस्तकुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ॥९॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्ज-पिहितां त्वत् तेजसा द्याम् इमाम्
उर्वी च अपि विलीन यावक-रस प्रस्तार मग्राम् इव।
पश्यन्ति क्षणम् अपि अनन्य-मनसा तेषां अनङ्ग ज्वर-
क्लान्ताः त्रस्त कुरङ्ग शावक-दृशः वश्याः भवन्ति स्फुटम् ॥९॥

9. ye sindūraparāgapuñjapihitām tvattejasā dyāmimām
urvīmcapī vilīnayāvakarasaprastāramaganāmiva;
paśyanti kṣanamapyananyamanasasteṣāmanaṅga jvara-
klāntātrastakuraṅga-śāvakadr̥śo vaśyā bhavanti sphuṭam .

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाङ्गदधरामाऽऽबद्धकाञ्ची स्रजं
 ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम्।
 तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारी भवन्त्यश्चिरं
 माद्यत्कुञ्जर कर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०॥

चञ्चत् काञ्चन कुण्डल अङ्गद-धराम् आबद्ध-काञ्ची-स्रजं
 ये त्वां चेतसि तद्-गते क्षणम् अपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम्।
 तेषां वेश्मसु विभ्रमाद् अहः अहः स्फारी भवन्त्यः चिरम्
 माद्यत् कुञ्जर करण-ताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०॥

10. cañcatkāñcanakuṇḍalāṅgadadharaṁāābaddhakāñcī srajam
 ye tvām cetasi tadgate kṣaṇamapi dhyāyanti kṛtvā sthitim;
 teṣāṁ veśmasu vibhramāda'harahaḥ sphārī bhavantyaściram
 mādyatkuñjara karṇatāla taralāḥ sthairyam bhajante śriyaḥ.

लघुस्तवः

आर्भट्या शशिखण्ड मण्डित जटाजूटां, नृमुण्ड स्रजं
बन्धूक प्रसवारुणाम्बरधरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽऽपीनतुंगस्तनीं
मध्ये निम्नवलि त्रयांकिततनुं त्वद्रूपसंवित्तये ॥११॥

आर्भट्या शशि-खण्ड-मण्डित जटा-जूटां नृ-मुण्ड-स्रजं
बन्धूक प्रसव अरुण अम्बर-धरां प्रेत आसन अध्या-सिनीम्
त्वां ध्यायन्ति चतुः भुजां त्रि-नयनां आपीन तुङ्ग-स्तनीम्
मध्ये निम्न वलि त्रय अङ्कित-तनुं त्वद् -रूप सं-वित्तये ॥११॥

1. ārbhatyā śasikhanda mandita jāṭājūṭām nṛmuṇḍa srajam
bandūka prasavāruṇāmbaṛadharām pretāsanādhyāsinīm;
tvām dhyāyanti caturbhujām trinayanām āpīna tuṅgastanīm
madhye nimnavali trayāṅkitatanum tvadrūpasamvittaye .

जातोप्यल्प परिच्छिदे क्षितिभुजां सामान्यमात्रे कुले
 निःशेषावनिचक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः।
 यद्विद्याधरवृन्दवन्दितपदः श्रीवत्सराजोऽभवत्
 देवि! त्वच्चरणाम्बुजप्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ॥१२॥

जातः अपि अल्प-परिच्छिदे क्षिति-भुजां सामान्य-मात्रे कुले
 निःशेष अवनि चक्रवर्ति-पदवीं लब्ध्वा प्रताप उन्नतः।
 यत् विद्या-धर-वृन्द वन्दित-पदः श्री-वत्स-राजः अभवत्
 देवि! त्वत् चरण अम्बुज प्रणति-जः सःअयं प्रसाद उदयः॥१२॥

12. jātopyalpa paricchide kṣitibhujām sāmānyamātre kule
 niḥśeṣāvanicakravartipadavīm labdhvā pratāponnataḥ;
 yadvidhyādharaṇḍavanditapadaḥ śrīvatsarājō 'bhavat
 devi! tvaccaraṇāmbujapranatijah so'yam prasādayaḥ .

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन-
 त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।
 ते दण्डाङ्कुश चक्र चाप कुलिश श्रीवत्समत्स्याङ्कितैः
 जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः ॥१३॥

चण्डि! त्वत् चरण अम्बुज अर्चन विधौ बिल्वी-दल उल् -लुण्ठन-
 त्रुट्यत् कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।
 ते दण्ड अङ्कुश चक्र चाप कुलिश श्री-वत्स मत्स्य अङ्कितैः
 जायन्ते पृथिवी-भुजः कथम् इव अम्भोज प्रभैः पाणिभिः ॥१३॥

13. caṇḍī! tvaccaraṇāmbujārcanavidhau bilvīdalolluṇṭhana
 trutyat kaṇṭakakoṭibhiḥ paricayam yeśāṃ na jagmuḥ karāḥ;
 te daṇḍāṅkuśacakracāpakuliśa śrīvatsamatsyāṅkitaiḥ
 jāyante prthivībhujāḥ kathamivāmbhojaprabhaiḥ pāṇibhiḥ .

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवैः
 त्वां देवीं त्रिपुरे! परापरमयीं सन्तर्प्य पूजाविधौ।
 यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
 तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृताः॥१४॥

विप्राः क्षोणि-भुजः विशः तत् इतरे क्षीर आज्य मधु आसवैः
 त्वां देवीं! त्रिपुरे! पर-अपरमयीं सन्-तर्प्य पूजा-विधौ।
 यां यां प्रार्थयते मनः स्थिर-धियां तेषां त एव ध्रुवं
 तां तां सिद्धिम् अवाप्नु-वन्ति तरसा विघ्नैः अविघ्नी कृताः॥१४॥

14. viprah kṣyonibhujo viśastaditare kṣīrājyamadhvāsavaiḥ
 tvām devīm Tripure! parāparamayīm santarpya pūjāvidhau;
 yām yām prārthayate manah sthiradhiyām teṣām ta eva dhruvam
 tām tām sidhimavāpnvanti tarasā vighnairavighnīkṛtāḥ.

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
 त्वत्तः केशववासवप्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
 लीयन्ते खलु यत्र कल्पविरमे ब्रह्मादयस्तेष्वमी
 सा त्वं काचिदऽचिन्त्यरूपमहिमा शक्तिः परा गीयसे ॥१५॥

शब्दानां जननी त्वम् अत्र भुवने वाक्-वादिनी इति उच्यसे
 त्वत्-तः केशव-वासव प्रभृतयः अपि आवि-र्भवन्ति स्फुटम्।
 लीयन्ते खलु यत्र कल्प-विरमे ब्रह्मा आदयः ते अपि अमी
 सा त्वं काचित् अचिन्त्य-रूप महिमा शक्तिः परा गीयसे ॥१५॥

15. śabdānām jananī tvamatra bhuvane vāgvādinītyucyase
 tvatṭaḥ keśavavāsavaprabhṛtayo'pyāvīrbhavanti sphuṭam;
 līyante khalu yatra kalpavirame brahmādayastepyamī
 sā tvam kācida'cintyarūpamahimā śaktiḥ parā gīyase .

देवानां त्रितयं, त्रयी हुतभुजां, शक्तित्रयं, त्रिस्वरा-
 स्त्रैलोक्यं, त्रिपदी, त्रिपुष्करमथो, त्रिब्रह्म, वर्णास्त्रयः।
 यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
 तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ॥१६॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुत-भुजां शक्ति-त्रयं त्रि-स्वराः
 त्रै-लोक्यं त्रि-पदी त्रि-पुष्करम् अथः त्रिब्रह्म वर्णाः त्रयः।
 यत् किं-चित् जगति त्रि-धा नियमितं वस्तु त्रि-वर्ग आत्मकं
 तत् सर्वं त्रि-पुरा इति नाम भगवति! अन्वेति ते तत्त्वतः ॥१६॥

16. devānām tritayam trayī hutabhujām śaktitrayam trisvarā-
 trailokyam tripadī tripuṣkaramatho tribrahma varṇāstrayaḥ;
 yatkiñcijjagati tridhā niyamitam vastu trivargātmakam
 tatsarvam tripureti nāma bhagavatyanveti te tattvataḥ .

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीमध्वनि
 क्रव्यादद्विपसर्पभाजि शवरीं कान्तारदुर्गे गिरौ।
 भूतप्रेतपिशाचजम्बुकभये स्मृत्वा महाभैरवीं
 व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोयप्लवे ॥१७॥

लक्ष्मीं राज-कुले जयां रण-भुवि क्षेमङ्करीम् अध्वनि
 क्रव्याद् द्विप-सर्प-भाजि-शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
 भूत-प्रेत पिशाच जम्बुक-भये स्मृत्वा महा-भैरवीम्
 व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदः तारां च तोय-प्लवे ॥१७॥

17. lakṣmīm rājakule jayām raṇabhuvī kṣemaṅkarīmādhvani
 kravyāddvipasarpabhāji śavarīm kāntāradurge girau;
 bhūtapretapiśācajambuka bhaye smṛtvā mahā -bhairavīm
 vyāmohe tripurām taranti vipadastāram ca toyaplave .

माया, कुण्डलिनी, क्रिया, मधुमती, काली, कला, मालिनी,
मातङ्गी विजया, जया, भगवती, देवी, शिवा, शाम्भवी।
शक्तिः, शंकरवल्लभा, त्रिनयना, वाग्वादिनी, भैरवी,
ह्रींकारी, त्रिपुरा, परापरमयी, माता, कुमारीत्यसि ॥१८॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शंकर-वल्लभा त्रि-नयना वाक्-वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा पर-अपर-मयी माता कुमारी इति असि ॥१८॥

18. māyā kuṇḍalinī krīyā madhumatī kālī kalā mālīnī,
mātāṅgī vijayā jayā bhagavatī devī śivā, śāmbhavī;
śaktiḥ śaṅkaravallabhā trinayanā vāgvādinī bhairavī,
hrīṁkāri tripurā parāparamayī mātā kumārītyasi .

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रिक्रमाद्यक्षरैः
 काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथ क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः।
 नामानि त्रिपुरे भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानि ते
 तेभ्यो भैरवपत्नि विंशतिसहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥१९॥

आई पल्लवितैः परस्पर-युतैः द्वि त्रि क्रम आदि अक्षरैः
 क-आद्यैः क्ष-अन्त-गतैः स्वर आदिभिः अथ क्ष-अन्तैः च तैः-स्वरैः।
 नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यानि अत्यन्त गुह्यानि ते
 तेभ्यः भैरव-पत्नि विंशति-सहस्रेभ्यः परेभ्यः नमः ॥१९॥

19. āi pallavitaiḥ parasparayutairdvitrikramādyakṣaraiḥ
 kādyaiḥ kṣāntagataiḥ svarādibhiratha kṣāntaiscataiḥ sasvaraiḥ
 nāmāni tripure bhavanti khalu yānyatyantaguhyāni te
 tebhyo bhairavapatni viṁśatisahasrebhyaḥ parebhyo namaḥ .

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं
 भारत्यास्त्रिपुरेत्यनन्यमनसा यत्राद्यवृत्ते स्फुटम्।
 एकद्वित्रिपदक्रमेण कथितस्त्वत्पादसंख्याक्षरै-
 मन्त्रोद्धारविधिर्विशेष सहितः सत्संप्रदायान्वितः ॥२०॥

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिः इयं कृत्वा मनः तद्-गतं
 भारत्याः त्रिपुरा इति अनन्य-मनसा यत्र आद्यवृत्ते स्फुटम्।
 एक द्वि त्रि पद-क्रमेण कथितः तत् पाद संख्या अक्षरैः
 मन्त्र उद्धार विधिः विशेष सहितः सत्-सम्प्रदाय अन्वितः ॥२०॥

20. bodhavyā nipuṇam budhaiḥ stutiriyam kṛtvā manastadgatam
 bhāratyāstripuretyananyamanasā yatrādyavṛtte sphuṭam;
 ekadvitripadakrameṇa kathitas-tvatpādasāṅkhyākṣarai-
 mantroddhāraavidhirviśeṣa sahitaḥ satsampradāyānvitaḥ .

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि।
सन्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरीकृतेनरचितं यस्मान्मयापि स्फुटम् ॥२१॥

स-अवद्यं निर्-अवद्यम् अस्तु यदि वा किं वा अनया चिन्तया
नूनं स्तोत्रम् इदं पठिष्यति नरः यस्य अस्ति भक्तिः त्वयि।
सं-चिन्त्य अपि लघु-त्वम् आत्मनि दृढं सं-जाय-मानं हठात्
त्वत् भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मात् मया अपि स्फुटम् ॥२१॥

21. sāvadyam niravadyamastu yadi vā kim vānayā cintayā
nūnam stotramidam paṭhiṣyati naro yasyāsti bhaktistvayī;
sañcintyāpi laghutvamātmani dṛḍham sañjāyamānam haṭhāt
tvad bhaktyā mukharīkṛtena racitam yasmānmayāpi sphutam .

इति श्री पञ्चस्तव्यां लघुस्तवः प्रथमः ॥

ॐ

अथ चर्चस्तवो द्वितीयः नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै

आनन्दसुन्दरपुरन्दरमुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ॥१॥

आनन्द-सुन्दर-पुरन्दर-मुक्त-माल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषा-सुरस्य।
पाद अम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरम् अम्बिकायाः ॥१॥

1. ānandasundarapurandaramuktaṁālyam
maulau haṭhena nihitam mahiṣāsurasya;
pādāmbujam bhavatu me vijayāya mañju -
mañjīraśiñjitamanoharamambikāyāḥ .

सौन्दर्यविभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
 सम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति।
 एते कवित्वकुमुदप्रकरावबोध-
 पूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननी ! प्रणामाः ॥२॥

सौन्दर्य विभ्रम-भुवः भुवन आधि-पत्य
 सम्पत्ति-कल्प-तरवः त्रिपुरे! जयन्ति।
 एते कवित्व-कुमुद प्रकर-अवबोध-
 पूर्ण इन्दवः त्वयि जगत् जननि! प्रणामाः ॥२॥

2. saundaryavibhramabhuvo bhuvanādhipatya-
 sampattikalpataravastripure ! jayanti;
 ete kavitvakumudaprakarāvabodha-
 pūrṇendavastvayi jagajjananī praṇāmāḥ!

देवि! स्तुतिव्यतिकरे कृतबुद्धयस्ते
वाचस्पतिप्रभृतयोऽपि जडीभवन्ति।
तस्मान्निसर्गजडिमा कतमोऽहमत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुरतापनपत्नि ! कर्तुम् ॥३॥

देवि! स्तुति-व्यतिकरे कृत-बुद्धयः ते
वाचः पति प्रभृतयः अपि जडी भवन्ति।
तस्मात् निसर्ग जडिमा कतमः अहम् अत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुर-तापन-पत्नि कर्तुम् ॥३॥

3. devi! stutivyatikare kṛtabuddhayaste
vācaspatiprabhṛtayo'pi jadībhavanti;
tasmānnisargajāḍimā katamo'hamatra
stotram tava tripuratāpanapatni ! kartum .

मातस्तथापि भवतीं भवतीव्रताप-
 विच्छित्तये स्तुतिमहार्णव कर्णधारः।
 स्तोतुं भवानि! स भवच्चरणारविन्द-
 भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरीकरोति॥४॥

मातः! तथा अपि भवतीं भव तीव्र-ताप-
 विच्छित्तये स्तुति महा अर्णव कर्ण-धारः।
 स्तोतुं भवानि ! स भवत् चरण अरविन्द-
 भक्ति-ग्रहः किम् अपि मां मुखरी करोति ॥४॥

4. mātastathāpi bhavatīm bhavatīvratāpa-
 vicchittaye stutimahārṇava karnadhārah;
 stotum bhavāni ! sa bhavaccaraṇāravinda -
 bhaktigrahaḥ kimapi mām mukharī karoti .

सूते जगन्ति भवती, भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती, भवानि!
मोहं भिनत्ति भवती, भवती रुणद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः ॥५॥

सूते जगन्ति भवती, भवती बिभर्ति
जागर्ति तत् क्षय-कृते भवती भवानि!
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि
लीला-यितं जयति चित्रं इदं भवत्याः ॥५॥

5. sūte jaganti bhavatī, bhavatī bibharti,
jāgarti tatksayakṛte bhavatī, bhavāni!
moham bhinatti bhavatī, bhavatī ruṇaddhi
līlāyitam jayati citramidam bhavatyāḥ .

यस्मिन्मनागपि नवाम्बुजपत्रगौरि!
 गौरि! प्रसादमधुरां दृशमादधासि।
 तस्मिन्निरन्तरमनंगशरावकीर्ण-
 सीमन्तिनीनयनसन्ततयः पतन्ति ॥६॥

यस्मिन् मनाक् अपि नव अम्बुज-पत्र गौरि!
 गौरि! प्रसाद-मधुरां दृशम् आदधासि ।
 तस्मिन् निरन्तरम् अनङ्ग शर अव-कीर्ण-
 सीमन्तिनी नयन सन्ततयः पतन्ति॥६॥

6. yasmin manāgapī navāmbujapatragauri !
 Gauri ! prasādamadhurām dr̥śamādadhāsi;
 tasminnirantaramanaṅgaśarāvakīrṇa -
 sīmantiṇīnayanasantatayaḥ patanti.

पृथ्वीभुजोऽप्युदयनप्रवरस्य तस्य
विद्याधरप्रणतिचुम्बितपादपीठः।
यच्चक्रवर्तिपदवीप्रणयः स एष
त्वत्पादपङ्कजरजःकणजः प्रसादः ॥७॥

पृथ्वी-भुजः अपि उदयन प्रवरस्य तस्य
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद-पीठः।
यत् चक्र-वर्ति पदवी प्रणयः स एष
त्वत् पाद पङ्कज-रजः कणजः प्रसादः ॥७॥

7. pr̥thvībhujō'pyudayanapravarasya tasya
vidyādharapraṇaticumbitapādapiṭhaḥ;
yaccakravartipadavīpraṇayaḥ sa eṣa
tvatpādapaṅkajaraḥ kaṇajaḥ prasādaḥ.

कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्रपूजा-
मुद्दीपितप्रियतमामदरक्तगीतिम्।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैलगुहागृहेषु ॥८॥

कल्प-द्रुम प्रसव कल्पित चित्र पूजाम्
उद-दीपित प्रियतमा मद-रक्त गीतिम्।
नित्यं भवानि! भवतीम् उप-वीणयन्ति
विद्या-धराः कनक-शैल गुहा-गृहेषु ॥८॥

8. kalpadrumaprasavakalpitacitrapūjā-
muddipitapriyatamāmadaraktagītim;
nityam Bhavāni ! bhavatīmupavīṇayanti
vidyādharaḥ kanakaśailaguhāgrhesu.

लक्ष्मीवशीकरणकर्मणि कामिनीना-
माऽकर्षणव्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्रमोहतिमिरच्छिदुरप्रदीपो
देवि! त्वदङ्घ्रिजनितो जयति प्रसादः॥९॥

लक्ष्मी वशी-करण कर्मणि कामिनी-नाम्
आकर्षण व्यतिकरेषु च सिद्ध-मन्त्रः।
निःरन्ध्र मोह-तिमिर छिदुर प्रदीपः
देवि ! त्वद् अङ्घ्रि जनितः जयति प्रसादः ॥९॥

9. lakṣmīvaśīkaraṇakarmani kāmīnīnām
ākārṣaṇavyatikareṣu ca siddhamantraḥ;
nīrandhramohatimiracchidurapradīpo
devi ! tvdaṅghrijanito jayati prasādaḥ.

देवि ! त्वदङ्घ्रिनखरत्नभुवो मयूखाः
 प्रत्यग्रमौक्तिकरुचो मुदमुद्वहन्ति।
 सेवानतिव्यतिकरे सुरसुन्दरीणां
 सीमन्तसीमि कुसुमस्तबकायितं यैः ॥१०॥

देवि! त्वत् अङ्घ्रि नख-रत्न-भुवः मयूखाः
 प्रत्यग्र मौक्तिक-रुचः मुदम् उद्वहन्ति।
 सेवा नति व्यतिकरे सुर-सुन्दरीणाम्
 सीमन्त सीमि कुसुम-स्तबकायितं यैः ॥१०॥

10. devi ! tvadāṅghrinakharatnabhuvo mayūkhāḥ
 pratyagramauktikaruco mudamudvahanti;
 sevānativyatikare surasundarīṇām
 sīmāntasīmni kusumastabakāyitam yaiḥ .

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिनदीधिति दीप्तिदीप्तं
मध्ये ललाटममरायुधरश्मिचित्रम्
हृच्चक्रचुम्बि हुतबुक्कणिकानुरूपं
ज्योतिर्यदेतदिदमम्ब ! तव स्वरूपम् ॥११॥

मूर्ध्नि स्फुरत् तुहिन दीधिति दीप्ति दीप्तं
मध्ये ललाटम् अमर आयुध रश्मि चित्रम्।
हृत्-चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिका अनुरूपं
ज्योतिः यत् एतत् इदम् अम्ब! तव स्वरूपम् ॥११॥

11. mūrdhni sphurattuhinadīdhitidīptidīptam
madhye lalāṭamamrāyudharaśmicitram;
hr̥ccakracumbi hutabuk-kaṇikānurūpam
jyotiriyadetadidamamba ! tava svarūpam .

रूपं तव स्फुरितचन्द्रमरीचिगौर-
 मालोकते शिरसि वागदिधैवतं यः।
 निःसीमसूक्तिरचनामृतनिर्भरस्य
 तस्य प्रसादमधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥१२॥

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौरम्
 आलोकते शिरसि वाक्-अधिदैवतं यः।
 निःसीम सूक्ति रचना अमृत निर्भरस्य
 तस्य प्रसादं मधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥१२॥

12. rūpam tava sphurita-candramarīcigaura -
 mālokate śīrasi vāgadidhaivatam yaḥ;
 niḥsīmasūktiracanāmṛtanirbharasya
 tasya prasādamadhurāḥ prasaranti vācaḥ .

सिन्दूर पांसुपटलच्छुरितामिव द्यां
 त्वत्तेजसा जतुरसस्त्रपितामिवोर्वीम्।
 यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे ! विहाय
 व्रीडां मृडानि ! सुदृशस्तमनुद्रवन्ति ॥१३॥

सिन्दूर-पांसु-पटल-छुरितां इव द्यां
 त्वत् तेजसा जतु-रस स्त्रपितां इव उर्वीम्।
 यः पश्यति क्षणम् अपि त्रिपुरे ! विहाय
 व्रीडां मृडानि ! सुदृशः तम् अनु-द्रवन्ति ॥१३॥

13. sindūra pāmsupaṭalacchuritāmiva dyām
 tvat -tejasā jaturasasnapitāmivorvīm;
 yaḥ paśyati kṣaṇamapi tripure! vihāya
 vrīḍām mṛḍāni ! sudṛśastamanudravanti .

मातर्मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं
 लाक्षारसप्रसरतन्तुनिभं भवत्याः।
 ध्यायन्त्यनन्यमनसस्तमनङ्गतप्ताः
 प्रद्युम्नसीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥१४॥

मातः मुहूर्तम् अपि यः स्मरति स्वरूपं
 लाक्षा-रस प्रसर तन्तु-निभं भवत्या।
 ध्यायन्ति अनन्य-मनसा तं अनङ्ग-तप्ताः
 प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्व-गुणं तरुण्यः॥१४॥

14. mātarmuhūrtamapi yaḥ smarati svarūpam
 lākṣārasaprasaratantunibham bhavatyāḥ;
 dyāyantyānanyāmanasastamanāṅgataptāḥ
 pradyumnasīmni subhagatvaguṇam taruṇyaḥ .

योऽयं चकास्ति गगनार्णवरत्नमिन्दु-
 योऽयं सुरासुरगुरुः पुरुषः पुराणः।
 यद्वाममर्धमिदमन्धकसूदनस्य
 देवि! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥१५॥

यः अयं चकास्ति गगन अर्णव रत्न इन्दुः
 यः अयं सुर-असुर-गुरुः पुरुषः पुराणः।
 यत् वामम् अर्ध इदं अन्धक-सूदनस्य
 देवि! त्वम् एव तत् इति प्रति-पादयन्ति ॥१५॥

15. yo'yam cakāsti gaganārṇavaratnaminduh
 yo'yam surāsuraguruḥ puruṣaḥ purāṇaḥ;
 yadvāmamardhamidamandhakasūdanasya
 devi ! tvāmeva taditi pratipādayanti .

इच्छानुरूपमनुरूपगुणप्रकर्षं
 संकर्षणि ! त्वमभिमृष्य यदा बिभर्ति।
 जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं
 देवः शिवोऽपि भुवनत्रयसूत्रधारः ॥१६॥

इच्छा अनुरूपं अनुरूप गुण प्रकर्षं
 सङ्कर्षणि ! त्वम् अभिमृष्य यदा बिभर्ति।
 जायेत स त्रिभुवन एक गुरुः तदानीम्
 देवः शिवः अपि भुवन-त्रय सूत्र-धारः ॥१६॥

16. icchānurūpamanurūpa guṇaprakarṣam
 saṅkarṣanī ! tvamabhimṛṣya yadā bibharti;
 jāyeta sa tribhuvanaikagurustadānīm
 devaḥ śivo'pi bhuvanatrayasūtradhārah .

रुद्राणि ! विद्रुममयीं प्रतिमामिव त्वां
 ये चिन्तयन्त्यरुणकान्तिमनन्यरूपाम्।
 तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभं भजन्ते
 कण्ठावसक्तमृदुबाहुलतास्तरुण्यः ॥१७॥

रुद्राणि ! विद्रुम-मयीं प्रतिमां इव त्वां
 ये चिन्तयन्ति अरुण कान्तिम् अनन्य-रूपाम्।
 तान् एत्य पक्ष्मल-दृशः प्रसभं भजन्ते
 कण्ठ अवसक्त मृदु-बाहु-लताः तरुण्यः ॥१७॥

17. Rudrāṇi ! vidrumamayīm pratimāmiva tvām
 ye cintayantyarūṇakāntimananyarūpām;
 tānetya pakṣmaladrśaḥ prasabham bhajante
 kaṇṭhāvasakta mṛdubāhulatāstaruṇyaḥ.

त्वद्रूपमुल्लसितदाडिमपुष्परक्त-
 मुद्भावयेन्मदनदैवतमक्षरं यः।
 तं रूपहीनमपि मन्मथनिर्विशेष-
 मालोकयन्त्युरुनितम्बभरास्तरुण्यः॥१८॥

त्वत् रूपं उल्-लसित-दाडिम पुष्प-रक्तम्
 उद्-भावयेत् मदन-दैवतम् अक्षरं यः।
 तं रूप-हीनम् अपि मन्मथ-निर्विशेषम्
 आलोक-यन्ति उरु-नितम्ब-भराः तरुण्यः॥१८॥

18. tvadrūpamullasitadāḍimapuṣparakta-
 mudbhāvayenmadanadaivataṁakṣaram yaḥ;
 tam rūpahīnamapi manmathanirviśeṣ-
 mālokayantyurunitambabharāstaruṇyaḥ .

ध्यातासि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरकल्मषमानसेन।
तस्याऽविलम्बमनवद्यमनल्प कल्प-
मल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि! वाग्विलासम्॥१९॥

ध्याता असि हैमवति! येन हिम-अंशु-रश्मि-
माला अमल द्युतिः अकल्मष मानसेन।
तस्य अविलम्बम् अनवद्यम् अनल्प-कल्पं
अल्पैः दिनैः सृजसि सुन्दरि वाक्-विलासम्॥१९॥

19. dyātāsi haimavati !yena himāṁśuraśmi -
mālā'-mala dyutirakalmaṣamānasena;
tasyā'vilambamanavadyamanalpa kalpa -
malpāirdinaih sṛjasi sundari ! vāgvilāsam .

आधारमारुतनिरोधवशेन येषां
 सिन्दूररंजितसरोजगुणानुकारि।
 दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं
 ध्यायन्ति तानिह समीहितसिद्धसाध्याः॥२०॥

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
 सिन्दूर रञ्जित सरोज गुण-अनुकारि।
 दीप्तं हृदि स्फुरति दैवि! वपुःत्वदीयं
 ध्यायन्ति तान् इह समी-हित सिद्ध साध्याः॥२०॥

20. ādhāramārutanirodhavaśena yeṣām
 sindūraranjitasarojaguṇānukāri;
 dīptam hr̥di sphurati devi! vapustvadiyam
 dyāyanti tāniha samīhitasidhasādhyāḥ.

त्वामैन्दवीमिव कलामनुभालदेश-
मुदभासिताम्बरतलामवलोकयन्तः।
सद्यो भवानि! सुधियः कवयो भवन्ति
त्वं भावनाहितधियां कुलकामधेनुः॥२१॥

त्वां ऐन्दवीम् इव कलाम् अनु-भाल-देशं
उद्-भासित अम्बर-तलाम् अवलोक-यन्तः।
सद्यः भवानि! सुधियः कवयः भवन्ति
त्वं भावना आहित-धियां कुल-काम-धेनुः ॥२१॥

21. tvāmaindavīmiva kalāmanubhāladeśa -
mudbhāsitāambaratalāmavalokayantaḥ;
sadyo bhavāni ! sudhiyaḥ kavayo bhavanti
tvam bhāvanāhitadhiyām kulakāmadhenuḥ .

त्वां व्यापिनीति समना इति कुण्डलीति
 त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति।
 त्वां मालिनीति ललितेत्यपराजितेति
 देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति॥२२॥

त्वां व्यपिनी इति समना इति कुण्डली इति
 त्वां कामिनी इति कमला इति कलावती इति।
 त्वां मालिनी इति ललिता इति अपराजिता इति
 देवि! स्तुवन्ति विजया इति जया इति उमा इति॥२२॥

22. tvām vyāpinīti samanā iti kuṇḍalīti
 tvām kāmīnīti kamaleti kalāvatīti;
 tvām mālinīti lalitetyaparājiteti
 devi ! stuvanti vijayeti jayetyumeti.

ये चिन्तयन्त्यरुणमण्डलमध्यवर्ति
 रूपं तवाम्ब ! नवयावकपङ्कपिंगम्।
 तेषां सदैव कुसुमायुधबाणभिन्न-
 वक्षःस्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति ॥२३॥

ये चिन्त-यन्ति अरुण-मण्डल मध्य-वर्ति
 रूपं तव अम्ब! नव यावक-पङ्क-पिङ्गम्।
 तेषां सदा एव कुसुम-आयुध बाण भिन्न-
 वक्षस्थलाः मृगदृशः वशगाः भवन्ति ॥२३॥

23. ye cintayantyarūṇamaṇḍalamadhyavarti
 rūpam tavāmba ! navayāvakapaṅkapingam;
 teṣāṃ sadaiva kusumāyudhabāṇabhinna -
 vakṣaḥsthalā mṛgadṛśo vaśagā bhavanti.

उत्तप्तहेमरुचिरे ! त्रिपुरे! पुनीहि
 चेतश्चिरन्तनमघौघवनं लुनीहि।
 कारागृहे निगडबन्धनपीडितस्य
 त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटन्तु ॥२४॥

उत्-तप्त हेम रुचिरे त्रिपुरे! पुनीहि
 चेतः चिरन्तनम् अघ-औघ-वनं लुनीहि।
 कारा-गृहे निगड-बन्धन पीडितस्य
 त्वत् सं-स्मृतौ झट् इति मे निगडाः त्रुटन्तु ॥२४॥

24. uttapta hemarucire ! tripure! punīhi
 cetaścirantanamaghaughavanam lunīhi;
 kārāgrhe nighaḍabandhanapīditasya
 tvatsamsmṛtau jhaṭīti me nigadāstruṭantu.

शर्वाणि! सर्वजनवन्दित पादपद्मे!
 पद्मच्छदच्छविविडम्बितनेत्रलक्ष्मि।
 निष्पापमूर्तिजनमानसराजहंसि!
 हन्सि त्वमापदमनेकविधां जनस्य ॥२५॥

शर्वाणि ! सर्व-जन-वन्दित पाद-पद्मे!
 पद्म-च्छद छवि विडम्बित नेत्र-लक्ष्मि!
 निष्पाप मूर्ति जन-मानस राज-हंसि!
 हन्सि त्वम् आपदम् अनेक-विधां जनस्य ॥२५॥

25. śarvāṇi ! sarvajanavanditapādapadme!
 padmacchadacchaviviḍambitanetralaksmi;
 niṣpāpa mūrtijanamānasarājahamsi !
 hansi tvamāpadamanekavidhām janasya.

त्वत्पादपंकजरजः प्रणिपातपूतैः
 पुण्यैरनल्पमतिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः।
 क्षीरक्षपाकरदुकूलहिमावदाता
 कैरप्यवापि भुवनत्रितयेऽपि कीर्तिः ॥२६॥

त्वत् पाद पङ्कज-रजः प्रणि-पात पूतैः
 पुण्यैः अनल्प मतिभिः कृतिभिः कवि-इन्द्रैः।
 क्षीर क्षपाकर दुकूल हिम अव-दाता
 कैः अपि अवापि भुवन-त्रितये अपि कीर्तिः ॥२६॥

26. tvatpādapaṅkajarajaḥ praṇipātapūtaiḥ
 puṇyairanalpamatibhiḥ kṛtibhiḥ kavīndraiḥ;
 kṣīrakṣapākaradukūlahimāvadātā
 kairapyavāpi bhuvanatritaye'pi kīrtiḥ.

त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्धो दृशोस्त्वदगुण-
ग्रामाकर्णनरागिता श्रवणयोस्त्वत्संस्मृतिश्चेतसि।
त्वत्पादार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि ! मा शाम्यतु ॥२७॥

त्वत् रूप एक निरूपण प्रणयिता बन्धः दृशोः त्वत् गुण-
ग्राम आकर्णन रागिता श्रवणयोः, त्वत् सं-स्मृतिः चेतसि।
त्वत् पाद अर्चन चातुरी करयुगे, त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्र अपि त्वत् उपासन व्यसनिता मे देवि! मा शाम्यतु ॥२७॥

27. tvadrūpaikanirūpaṇapraṇayitābandho dṛśostvadguṇa-
grāmākarnanarāgitā śravaṇayostvatsaṁsmṛtiscetasi;
tvatpādārcanacāturī karayuge tvatkīrtanam vāci me
kutrapī tvadupāsanavyasanitā me devi ! mā śāmyatu.

उद्दामकाम परमार्थ सरोजषण्ड-
 चण्डद्युतिद्युतिमुपासित षट्प्रकाराम्।
 मोहद्विपेन्द्रकदनोद्यतबोधसिंह-
 लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥२८॥

उद्-दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
 चण्ड-द्युति द्युतिम् उपासित षट्-प्रकाराम्।
 मोह द्विप-इन्द्र कदन उद्यत बोध सिंह-
 लीला-गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥२८॥

28. uddāmakāma paramārtha sarojaṣaṇḍa -
 caṇḍadyutidyutimupāsita ṣaṭprakārām;
 mohadvipendrakadanodyatabodhasiṁha -
 līlāguhām bhagavatīm tripurām namāmi.

गणेशवटुकस्तुता रतिसहायकामान्विता
स्मरारिवरविष्टरा कुसुमबाणबाणैर्युता।
अङ्गकुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवनमध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु नः ॥२९॥

गणेश वटुक स्तुता रति सहाय काम अन्विता
स्मर अरि वर विष्टरा कुसुम-बाण बाणैः युता।
अनङ्ग-कुसुम-आदिभिः परिवृता च सिद्धैः त्रिभिः
कदम्ब वन-मध्यगा त्रिपुर-सुन्दरी पातु नः ॥२९॥

29. gaṇeśavaṭukastutā ratisahāyakāmānvitā
smrārivaraviṣṭarā kusumabāṇabāṇairyutā;
anaṅgakusumādibhiḥ parivṛtā ca siddhaistribhiḥ
kadambavanamadhyagā tripurasundarī pātu naḥ.

ब्रह्मेन्द्ररुद्रहरिचन्द्रसहस्ररश्मि-
 स्कन्दद्विपाननहुताशनवन्दितायै।
 वागीश्वरि! त्रिभुवनेश्वरि! विश्वमात-
 रन्तर्बहिश्च कृतसंस्थितये नमस्ते ॥३०॥

ब्रह्मा इन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र-रश्मि
 स्कन्द द्विप-आनन हुताशन वन्दितायै।
 वाक् ईश्वरी! त्रि-भुवन-ईश्वरी! विश्व-मातः।
 अन्तः बहिः च कृत-संस्थितये नमः ते॥३०॥

30. brahmendrarudraharicandrasahasraraśmī-
 skandadvipānanahutāśanavanditāyai;
 vāgīśvari! tribuvaneśvari ! viśvamāta -
 rantarbahiśca kṛtasamsthitaye namaste.

यस्तोत्रमेतदनुवासरमीश्वरायाः
 श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति।
 तस्येप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ
 जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥३१॥

यः स्तोत्रं एतत् अनु-वासरम् ईश्वरायाः
 श्रेयः-करं पठति वा यदि वा शृणोति।
 तस्य ईप्सितं फलति राजभिः ईड्यते असौ
 जायेत स प्रियतमः हरिण ईक्षणानाम् ॥३१॥

31. yastotrametadanuvāsaramīśvarāyāḥ
 śreyaskaram paṭhati vā yadi vā śṛnoti;
 tasyepsitam phalati rājabhirīḍyate'sau
 jāyeta sa priyatamo harīṇekṣṇānām.

इति श्री पंचस्तव्यां चर्चस्तवः द्वितीयः ॥

1873. Dec. 1. 1873.
u. 1873. 1873. 1873. 1873.

u. 1873. 1873. 1873. 1873.

1873. 1873. 1873. 1873.
1873. 1873. 1873. 1873.
1873. 1873. 1873. 1873.
1873. 1873. 1873. 1873.

1873. 1873. 1873. 1873.

ॐ

अथ घटस्तवो तृतीयः नमस्त्रिपुरसन्दर्यै

देवि! त्रयम्बकपत्नि ! पार्वति! सति! त्रैलोक्यमातः! शिवे!
शर्वाणि! त्रिपुरे! मृडानि! वरदे! रुद्राणि! कात्यायनि!
भीमे! भैरवि! चण्डि! शर्वरि ! कले! कालक्षये! शूलिनि!
त्वत्पादप्रणताननन्यमनसः पर्याकुलान्पाहि नः ॥१॥

देवि! त्र्यम्बक-पत्नि! पार्वति! सति! त्रैलोक्य-मातः! शिवे!
शर्वाणि! त्रिपुरे! मृडानि! वरदे! रुद्राणि! कात्यायनि!
भीमे! भैरवि! चण्डि! शर्वरि! कले! काल-क्षये! शूलिनि!
त्वत्-पाद-प्रणतान् अनन्य-मनसः परि आकुलान् पाहि नः ॥१॥

devi! tryambakapatni! pārvati! sati! trailokyamātāḥ! śive!
śarvāṇi! tripure! mṛdāni! varade! rudrāṇi! kātyāyani!
bhime! bhairavi! caṇḍi! śarvari! kale! kālakṣaye! śūlini!
tvatpādapraṇatānananyamanaśaḥ paryākulānpāhi naḥ.

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्तमूर्च्छा इव
 प्राप्तप्रौढमदा इवातिविरहग्रस्ता इवार्ता इव।
 ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त, एकाग्रत-
 स्त्यक्तोपाधिविवृद्धरागमनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥

उन्मत्ता इव सग्रहाः इव विष व्यासक्त-मूर्च्छा इव
 प्राप्त प्रौढ-मदा इव अति-विरह-ग्रस्ता इव आर्ता इव।
 ये ध्यायन्ति हि शैल-राज-तनयां धन्याः ते एकाग्रतः
 त्यक्त उपाधि विवृद्ध-राग-मनसः ध्यायन्ति वाम-भ्रुवः ॥२॥

2. unmattā iva sagrahā iva viṣavyāsaktamūrcchā iva
 prāptapraudamadā ivātivirahagrastā ivārtā iva;
 ye dhyāyanti hi śailarājatanayām dhanyāsta, ekāgrata -
 styaktopādhivivṛddharāgamanaso dhyāyanti vāmabhruvaḥ .

देवि! त्वां सकृदेव यः प्रणमति, क्षोणीभृतस्तंनम-
 न्त्याजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठविलुठत्कोटीरकोटिच्छटाः।
 यस्त्वामर्चति सोऽर्च्यते सुरगणैर्यः स्तौति स स्तूयते
 यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्तिविधुरा ध्यायन्ति वामभ्रुवः॥३॥

देवि! त्वां सकृत् एव यः प्रणमति, क्षोणी-भृतः तं नमन्ति
 आजन्म स्फुरत् अङ्घ्रि-पीठ विलुठत् कोटीर-कोटि छटाः।
 यः त्वां अर्चति सः अर्च्यते सुर-गणैः यः स्तौति स स्तूयते
 यः त्वां ध्यायति तं स्मर-आर्त्ति-विधुराः ध्यायन्ति वाम-भ्रुवः ॥३॥

3. devi ! tvām sakṛdeva yaḥ praṇamati, kṣoṇībhṛtastam nam-
 ntyājanma sphuradāṅgripīṭhaviḷuṭhatkotīrakoticchataḥ;
 yastvāmarcati so'rcyate suragaṇairyaḥ stauti sa stūyate
 yastvām dhyāyati tam smarārtividhurā dhyāyanti vāmabhruvaḥ.

ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
 लावण्ययौवनधनैरपि विप्रयुक्ताः।
 ते विस्फुरन्ति ललितायतलोचनानां
 चित्तैकभित्तिलिखितप्रतिमाः पुमांसः ॥४॥

ध्यायन्ति ये क्षणम् अपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
 लावण्य यौवन धनैः अपि वि-प्रयुक्ताः।
 ते वि-स्फुरन्ति ललित आयत-लोचनानां
 चित्त एक भित्ति लिखित प्रतिमाः पुमांसः ॥४॥

4. dyāyanti ye kṣaṇamapi tripure! hr̥di tvām
 lāvaṇyayauvanadhanairapi viprayuktāḥ;
 te visphuranti lalitāyatalocanānām
 cittaikabhittilikhitapratimāḥ pumāṁsaḥ .

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
किं वामुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये।
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटनाकूतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ॥५॥

एतं किं नु दृशा पिबामि उत विशामि अस्य अङ्गं अङ्गैः निजैः
किं वा अमुं निगलामि अनेन सहसा किं वा एकतां आश्रये।
तस्य इत्थं विवशः विकल्प-घटना आकूतेन योषित्-जनः
किं तत् यत् न करोति देवि! हृदये यस्य त्वं आवर्तसे ॥५॥

5. etam kim nu dr̥śā pibāmyuta viśāmyasyāṅgamaṅgairnijaiḥ
kim vāmum nigalāmyanena sahasā kim vaikatāmāśraye;
tasyetham vivaśo vikalpaghaṭanākūtena yoṣijjanah
kim tadyanna karoti devi ! hṛdaye yasya tvamāvartase.

विश्वव्यापिनि यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
 शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
 इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
 त्वद्भक्तानपि, न क्षिणोषि च रुषा, तद्देवि चित्रं महत् ॥६॥

विश्व-व्यापिनि यत् वत् ईश्वर इति स्थाणौ अनन्य-आश्रयः
 शब्दः शक्तिः इति त्रिलोक-जननि! त्वयि एव तथ्य-स्थितिः।
 इत्थं सति अपि शक्नुवन्ति यत् इमाः क्षुद्राः रुजः बाधितुं
 त्वत् भक्तान् अपि, न क्षिणोषि च रुषा तत् देवि! चित्रं महत् ॥६॥

6. viśvavyāpini yadvadīśvara iti sthāṇāvananyāśrayaḥ
 śabdhaḥ śaktiriti trilokajanani! tvayyeva tathyasthitiḥ;
 ittham satyapi śaknuvanti yadimāḥ kṣudrā rujo bādhitum
 tvadbhaktānapi, na kṣiṇoṣi ca ruṣā, taddevi citram mahat .

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्ल सरोरुहासनगतां स्निग्धप्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीममृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-
स्ते निर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान्दूरतः॥७॥

इन्दोः मध्य-गतां मृग-अङ्क-सदृश-छायां मनो-हारिणीम्
पाण्डु-उत्फुल्ल सरोरुह-आसन-गतां स्निग्ध प्रदीप छविम्।
वर्षन्तीं अमृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिनः
ते निर्- मुक्त-रुजः भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान् दूरतः॥७॥

7. indormadhyagatām mṛgāṅkasadṛśacchāyām manohārīṇīm
pāṇḍūtphulla saroruhāsanagatām snigdhapradīpacchavim;
varṣantīmamṛtam bhavāni! bhavatīm dhyāyanti ye dehina-
ste nirmuktarujo bhavanti vipadaḥ projjhanti tāndurataḥ .

पूर्णन्दोः शकलैरिवातिबहलैः पीयूषपूरैरिव
 क्षीराब्धेः लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव।
 प्रालेयैरिव निर्मितं तव वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया
 चित्तान्तर्निहतार्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति॥८॥

पूर्ण-इन्दोः शकलैः इव अति बहलैः पीयूष-पूरैः इव
 क्षीर अब्धेः लहरी-भरैः इव सुधा-पङ्कस्य पिण्डैः इव।
 प्रालेयैः इव निर्मितं तव वपुः ध्यायन्ति ये श्रद्धया
 चित्त अन्तर निहत-आर्ति ताप विपदः ते सम्पदं बिभ्रति॥८॥

8. pūrṇendoh śakalairivātibahalaiḥ pīyūṣapūrainiva
 kṣīrābdeḥ laharībharairiva sudhāpaṅkasya piṇḍairiva;
 prāleyairiva nirmitam tava vapurdhyāyanti ye śradhayā
 cittāntarnihatārtitāpavipadaste saṃpadam bibhrati .

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
 त्वां ग्रन्थिपञ्चकभिदं तरुणार्कशोणाम्।
 रागार्णवे बहलरागिणि मज्जयन्तीं
 कृत्स्नं जगद् दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः॥९॥

ये सं-स्मरन्ति तरलां सहसा उल्लसन्तीं
 त्वां ग्रन्थि पञ्चक भिदं तरुण-अर्क-शोणाम्।
 राग अर्णवे बहल-रागिणि मज्जयन्तीं
 कृत्स्नं जगत् दधति चेतसि तान् मृग अक्ष्यः॥९॥

9. ye saṁsmaranti taralām sahasollasantīm
 tvām granthipañcakabhidam taruṇārkaśoṇām;
 rāgārṇave bahalarāgiṇi majjaynatīm
 kṛtsnam jagad dadhati cetasi tānmṛgākṣyaḥ .

लाक्षारसस्नपितपङ्कजतन्तुतन्वी-
 मऽन्तः स्मरत्यनुदिनं भवतीं भवानि!
 यस्तं स्मरप्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा
 नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमर्चयन्ति ॥१०॥

लाक्षा-रस-स्नपित पङ्कज तन्तु तन्वीम्
 अन्तः स्मरत अनु-दिनं भवतीं भवानि!
 यः तं स्मर- प्रतिमं अप्रतिम स्वरूपा
 नेत्र-उत्पलैः मृग-दृशः भृशम् अर्चयन्ति॥१०॥

10. lākṣārasasnapitapaṅkajatantutanvī -
 mantāḥ smaratyanudīnam bhavatīm bhavāni!
 yastam smarapratimama'pratimasvarūpā
 netrotpalairmṛgadrśo bhr̥śamarcayanti .

स्तुमस्त्वां वाचमव्यक्तां हिमकुन्देन्दुरोचिषम्।
कदम्बमालां बिभ्राणामापादतललम्बिनीम्॥११॥

स्तुमः त्वां वाचम् अव्यक्तां हिम कुन्द इन्दु रोचिषम्।
कदम्ब मालां बिभ्राणाम्, आपाद-तल लम्बिनीम्॥११॥

11. *stumastvām vācamavyaktām himakundendurociṣam;*
kadambamālām bibhrāṇāmāpādatalalambinīm .

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
 वर्षन्तीममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रन्ध्रेऽपि च।
 अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाति प्रसन्नाऽपि च
 त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक् सर्वतो वल्गति ॥१२॥

मूर्ध्नि इन्दोः सित-पङ्कज आसन-गतां प्रालेय-पाण्डु-त्विषं
 वर्षन्तीं अमृतं सरोरुह-भुवः वक्त्रे अपि रन्ध्रे अपि च।
 अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता च अति प्रसन्ना अपि च
 त्वाम् एव स्मरतां स्मर-अरि-दयिते! वाक् सर्वतो वल्गति ॥१२॥

12. *murdhanīndoh̐ sitapaṅkajāsanaḡatām prāleyapāṇḡutviṣam*
varṣantūm'mṛtam saroruhabhuvo vaktre'pi randhre'pi ca;
acchinnā ca manohārā ca lalitā cāti prasannā'pi ca
tvāmeva smaratām smrāridayite ! vāk sarvato valgati .

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
 दहत्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
 हठादन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्टविरहं
 सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते॥१३॥

ददाति इष्टान् भोगान् क्षपयति रिपून् हन्ति विपदः
 दहति आधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
 हठात् अन्तर-दुःखं दलयति पिनष्टि इष्ट-विरहम्
 सकृत् ध्याता देवी किम् इव निः-अवद्यं न कुरुते ॥१३॥

13. dadātiṣṭānbhogānksapayati ripūnhanti vipado
 dahatyādhīn vyādhīn śamayati sukhāni pratanute;
 haṭhādantarduḥkḥam dalayati pinaṣṭīṣṭaviraham
 sakṛd-dhyātā devi kimiva niravadhyam na kurute .

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-
 त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति।
 यश्च त्र्यम्बकवल्लभे ! तव गुणानाकर्णयत्यादरा-
 त्तस्य श्रीर्नगृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावति॥१४॥

यः त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपति आलोकते चिन्तयति
 अन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौति आश्रयति अर्चति।
 यः च त्र्यम्बक-वल्लभे ! तव गुणान् आकर्णयति आदरात्
 तस्य श्रीः न गृहात् अपैति विजयः तस्य अग्रतः धावति॥१४॥

14. yastvām dhyāyati vetti vindati japatyālokate cintaya-
 tyanveti pratipadyate kalayati stautyāśrayatyarcati;
 yaśca tryambakavallabhe! tava guṇānākarnayatyādarā -
 ttasya śrīrna grahādapaiti vijayastasyāgrato dhāvati .

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां
 का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
 का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां
 कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम्॥१५॥

किं किं दुःखं दनुज-दलिनि! क्षीयते न स्मृतायां
 का का कीर्तिः कुल-कमलिनि! ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
 का का सिद्धिः सुर-वर-नुते! प्राप्यते न अर्चितायां
 कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तम् आलम्बितायाम्॥१५॥

15. kim kim duḥkham danujadalinī ! kṣīyate na smṛtāyām
 kā kā kīrtiḥ kulakamalinī ! khyāpyate na stutāyām;
 kā kā siddhiḥ suravarānute! prāpyate nārcitāyām
 kam kam yogam tvayi na cinute cittamālambitāyām .

ये देवि! दुर्धरकृतान्तमुखान्तरस्था
 ये कालि! कालघनपाशनितान्तबद्धाः।
 ये चण्डि! चण्डगुरुकल्मषसिन्धुमग्ना-
 स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव॥१६॥

ये देवि! दुर्धर कृतान्त मुख अन्तरस्था
 ये कालि! काल-घन-पाश-नितान्त-बद्धाः।
 ये चण्डि! चण्ड-गुरु-कल्मष-सिन्धु-मग्नाः
 तान् पासि मोचयसि तारयसि स्मृता एव ॥१६॥

16. ye devi! durdharakṛtāntamukhāntarasthā
 ye kālī! kālaghanapāśanitānta baddhāḥ;
 ye candi ! candagurukalmasasindhumnā -
 stānpāsi mocayasi tārayasi smṛtaiva .

लक्ष्मीवशीकरणचूर्णसहोदराणि
 त्वत्पादपङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति।
 यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे
 लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि॥१७॥

लक्ष्मी वशी-करण-चूर्ण सह उदराणि
 त्वत् पाद-पङ्कज-रजांसि चिरं जयन्ति।
 यानि प्रणाम-मिलितानि नृणां ललाटे
 लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुर-अक्षराणि॥१७॥

17. lakṣmīvaśīkaraṇacūrṇasahodarāṇi
 tvatpādapaṅkajarajāmsi ciram jayanti;
 yāni praṇāmamilitāni nṛṇām lalāṭe
 lumpanti daivalikhitāni durakṣarāṇi.

रे मूढाः! किमयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते।
 यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तीक्रियन्ते गृहाः।
 भक्तिश्चेदविनाशिनी भगवतीपादद्वयी सेव्यता-
 मुन्निद्राम्बुरुहातपत्रसुभगा लक्ष्मीः पुरो धावति ॥१८॥

रे मूढाः ! किं अयं वृथा एव तपसा कायः परि-क्लिश्यते
 यज्ञैः वा बहु-दक्षिणैः किं इतरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः।
 भक्तिः चेत् अविनाशिनी भगवती पाद-द्वयी सेव्यताम्
 उन्निद्र अम्बुरुह आत-पत्र सुभगा लक्ष्मीः पुरः धावति॥१८॥

18. re mūḍhāḥ! kimayam vṛthaiva tapasā kāyaḥ parikliśyate
 yajñairvā bahudakṣinaiḥ kimitare riktīkriyante grhāḥ;
 bhaktiścedavināśinī bhagavatīpādadvayī sevyatā -
 munnidrāmburuhātapatrasubhagā lakṣmīḥ puro dhāvati .

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
 सेवे न कंचन निरस्तसमस्तदैन्यः।
 श्लक्ष्णं वसे मधुरमद्भि भजेवरस्त्री-
 देवी हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥१९॥

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
 सेवे न कंचन निरस्त-समस्त दैन्यः।
 श्लक्ष्णं वसे मधुरं अद्भि भजे वर-स्त्रीः।
 देवी हृदि स्फुरति मे कुल-कामधेनुः ॥१९॥

19. yāce na kañcana na kañcana vañcayāmi
 seve na kañcana nirastasamastadhainyah;
 ślakṣṇam vase madhuramadmi bhajevarastrī
 devī hr̥di sphurati me kulakāmadhenuḥ.

शब्दब्रह्ममयि स्वच्छे देवि त्रिपुरसुन्दरि
यथाशक्ति जपं पूजां ग्रहाण परमेश्वरि ॥२०॥

शब्द-ब्रह्म-मयि! स्वच्छे! देवि! त्रिपुर-सुन्दरि।
यथा-शक्ति जपं पूजां ग्रहाण परमेश्वरि॥२०॥

20. śabdabrahmamayī svacche devi tripurasundarī;
yathāśakti japam pūjām grhāṇa parameśvari.

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
 अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा॥२१॥

नन्दन्तु साधकाः सर्वे वि-नश्यन्तु विदूषकाः।
 अवस्था शाम्भवी मे अस्तु प्रसन्नः अस्तु गुरुः सदा॥२१॥

21. nandantu sādhakāḥ sarve vinasyantu vidūṣakāḥ;
 avasthā śāmbhavī me'stu prasanno'stu guruḥ sadā.

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्युविनाशिनी।
पूजिता दुःखदौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी ॥२२॥

दर्शनात् पाप-शमनी जपात् मृत्यु-विनाशिनी।
पूजिता दुःख-दौर्भाग्य-हरा त्रिपुर-सुन्दरी ॥२२॥

22. darśanātpāpaśamanī japānmṛtyuvināśinī;
pūjitā duḥkhadaurbhāgyaharā tripurasundarī.

नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम्।
भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीम्॥२३॥

नमामि यामिनी-नाथ-लेख-अलङ्कृत-कुन्तलाम्।
भवानीं भव-सन्ताप निर्वापण सुधा-नदीम्॥२३॥

23. namāmi yāminīnāthalekhālāṅṛtakuntalām;
bhavānīm bhavasantāpanirvāpaṇasudhānadīm.

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम्।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि॥२४॥

मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं विधि-हीनं च यत् गतम्।
त्वया तत् क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि॥२४॥

24. mantrahīnam kriyāhīnam vidhihīnam ca yadgatam;
tvayātat kṣamyatām devī ! kṛpayā parameśvari!

इति श्री पञ्चस्तव्यां घटस्तवः तृतीयः ॥

ॐ

अथ अम्बस्तवः चतुर्थः
ओं नमोऽम्बिकायै

यामामनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो वदन्ति।
तामर्धपल्लवितशङ्कररूपमुद्रां
देवीमनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये॥१॥

याम् आमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीम्
विद्या इति यां श्रुति-रहस्य-विदः वदन्ति।
तां अर्ध-पल्लवित शङ्कर-रूप मुद्रां
देवीं अनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये॥१॥

1. yāmāmananti muṇayaḥ prakṛtim purāṇīm
vidyēti yām śrutirahasyavidō vadanti;
tāmardhapallavita śaṅkararūpa mudrām
devīmananyaśaraṇaḥ śaraṇam prapadye.

अम्बस्तवेषु तव तावदकर्तृकाणि
 कुण्ठी भवन्ति वचसामपि गुम्फनानि।
 डिम्बस्य मे स्तुतिरसावसमञ्जसापि
 वात्सल्यनिघ्नहृदयां भवतीं धिनोति॥२॥

अम्ब ! स्तवेषु तव तावत् अकर्तृकाणि
 कुण्ठी भवन्ति वचसां अपि गुम्फनानि।
 डिम्बस्य मे स्तुतिः असौ असमञ्जसा अपि
 वात्सल्य-निघ्न-हृदयां भवतीं धिनोति॥२॥

2. ambastaveṣu tava tāvadakarṭṛkāṇī
 kuṇṭhī bhavanti vacasāmpi gumphanāni;
 ḍimbasya me stutirasāvasamañjasāpi
 vātsalyanighnahrdayām bhavatīm dhinoti.

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति।
निःष्यन्दमानसुखबोधसुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम्॥३॥

व्योम इति बिन्दुः इति नाद इति इन्दु-लेखा
रूपा इति वाक् भवतनूः इति मातृका इति।
निष्यन्द-मान सुख-बोध सुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥३॥

3. vyometi binduriti nāda itīndulekhā
rūpeti vāgbhavatanūriti mātṛketi;
niḥṣyandamānasukhabodhasudhāsvarūpā
vidyotase manasi bhāgyavatām janānām.

आविर्भवत्पुलकसन्ततिभिः शरीरै-
 निर्ण्यन्दमानसलिलैर्नयनैश्च नित्यम्।
 वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये
 पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

आविर्भवत् पुलक-सन्ततिभिः शरीरैः
 निः-ष्यन्द-मान सलिलैः नयनेः च नित्यम्।
 वाग्भिः च गद्-गद्-पदाभिः उपासते ये
 पादौ तव अम्ब! हृदयेषु ते एव धन्याः॥४॥

4. āvirbhavatpulakasantatibhiḥ śarīrai -
 rniṣyandamānasalilairnayanaiścanityam;
 vāgbhiśca gadgadapadābhirupāsate ye
 pādau tavāmba! bhuvaneṣu ta eva dhanyāḥ.

वक्त्रं यदुद्यतमभिष्ठुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि! शिरः करोति।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः॥५॥

वक्त्रं यत् उद्यतं अभिष्ठुतये भवत्या
तुभ्यम् नमः यत् अपि देवि! शिरः करोति।
चेतः च यत् त्वयि परायणं अम्ब! तानि
कस्य अपि कैः अपि भवन्ति तपः विशेषैः॥५॥

5. vaktram yadudyatamabhiṣṭhutaye bhavatyā-
stubhyam namo yadapi devi! śirah karoti;
cetasca yat-tvayi parāyaṇamamba! tāni
kasyāpi kairapi bhavanti tapoviśeṣaiḥ.

मूलालवालकुहरादुदिता भवानि!
 निर्भिद्य षट् सरसिजानि तडिल्लतेव।
 भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
 निष्यन्दमानपरमामृततोयरूपा॥६॥

मूल आलवाल कुहरात् उदिता भवानी!
 निर्भिद्य षट् सरसिजानि तडित् लता इव।
 भूयः अपि तत्र विशसि ध्रुव-मण्डल-इन्दु-
 निष्यदमान परम अमृत तोय-रूपा॥६॥

6. mūlālavālaharāduditā bhavānī !
 nirbhidya ṣaṭ sarasijāni taḍillateva;
 bhūy'opi tatra viśasi dhruvamāṇdalendu-
 niṣyandamānaparamāmṛtatoyarūpā.

दग्धं यदा मदनमेकमनेकधा ते
 मुग्धः कटाक्षविधिरङ्कुरयांचकार।
 धत्ते तदाप्रभृति देवि! ललाटनेत्रं
 सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः॥७॥

दग्धं यदा मदनम् एकम् अनेकधा ते
 मुग्धः कटाक्ष विधिः अङ्कुरयांचकार।
 धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट-नेत्रम्
 सत्यं ह्रिया एव मुकुली-कृतम् इन्दु-मौलिः ॥७॥

7. dagdam yadā madanamekamanekadhā te
 mugdhaḥ kaṭākṣavidhirāṅkuryaṅcakāra;
 dhatte tadāprabhṛti devi! lalāṭanetrām
 satyam hriyeva mukulīkṛtamindumauliḥ.

अज्ञातसम्भवमनाकलितान्ववायं
 भिक्षुं कपालिनमवाससमद्वितीयम्।
 पूर्वं करग्रहणमङ्गलतो भवत्याः
 शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये! ॥८॥

अज्ञात-सम्भवम् अनाकलित अन्वायं
 भिक्षुं कपालिनम् अवाससम् अद्वितीयम्।
 पूर्वं कर-ग्रहण-मङ्गलतः भवत्याः
 शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराज-कन्ये! ॥८॥

8. ajñātasambhavamanākālitānvavāyam
 bhikṣum kapālinamavāsasamadvitīyam;
 pūrvam karagrahaṇamaṅgalato bhavatyā
 śambhum ka eva bubudhe girirājakanye!

चर्माम्बरं च शवभस्मविलेपनं च
 भिक्षाटनं च नटनं च परेतभूमौ।
 वेतालसंहतिपरिग्रहता च शम्भोः
 शोभां बिभर्ति गिरिजे तव साहचर्यात्॥९॥

चर्म अम्बरं च शव-भस्म विलेपनं च
 भिक्षा अटनं च नटनं च परेत भूमौ।
 वेताल संहति परि-ग्रहता च शम्भोः
 शोभां बिभर्ति गिरिजे तव साहचर्यात्॥९॥

9. **carmāmbaram ca śavabhasmavilepanam ca
 bhikṣāṭanam ca naṭanam ca paretabhūmau;
 vetālasamhatiparigrahatā ca śambhoḥ
 śobhām bibharti girije ! tava sāhacaryāt.**

कल्पोपसंहरणकेलिषु पण्डितानि
 चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि।
 आलोकनेन तव कोमलितानि मात-
 र्लास्यात्मना परणमन्ति जगद्विभूत्यै॥१०॥

कल्प उप-संहरण केलिषु पण्डितानि
 चण्डानि खण्ड-परशोः अपि ताण्डवानि।
 आलोकनेन तव कोमलितानि मातः
 लास्यात्मना परिणमन्ति जगत्-विभूत्यै॥१०॥

10. kalpopasamharaṇakeliṣu paṇḍitāni
 caṇḍāni khaṇḍaparaśorapi tāṇḍavāni;
 ālokanena tava komalitāni mātā -
 rlāsyātmanā pariṇamanti jagadvibhūtyaih.

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्याणि! दैशिककटाक्षसमाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भववेधदीक्षा॥११॥

जन्तो अपश्चिम-तनोः सति कर्म-साम्ये
निःशेष पाश-पटल-छिदुरा निमेषात्।
कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समा-श्रयेण
कारुण्यतः भवसि शाम्भव वेद-दीक्षा॥११॥

11. jantorapaścimatanoḥ sati karmasāmye
nihśeṣapāśapaṭalacchidurā nimeṣāt;
kalyāṇi! daiśikakataākṣasamāśrayeṇa
kāruṇyato bhavasi śāmbhavavedhadīkṣā.

मुक्ताविभूषणवती नवविद्रुमाभा
 यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
 एकः स एव भुवनत्रयसुन्दरीणां
 कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥१२॥

मुक्ता विभूषण-वती नव-विद्रुम आभा
 यत् चेतसि स्फुरसि तारकिता इव सन्ध्या।
 एकः स एव भुवन-त्रय-सुन्दरीणां
 कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विना अपि ॥१२॥

12. muktāvibhūṣaṇavatī navavidrumābhā
 yaccetasi sphurasi tārakiteva sandhyā;
 ekaḥ sa eva bhuvanatrayasundarīṇām
 kandarpatām vrajati pañcaśarīm vināpi.

ये भावयन्त्यमृतवाहिभिरंशुजालै-
 राप्यायमानभुवनाममृतेश्वरीं त्वाम्।
 ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीयां
 ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्ष्याम्॥१३॥

ये भावयन्ति अमृत वाहिभिः अंशु-जालैः
 आप्याय-मान भुवनां अमृत ईश्वरीं त्वाम्।
 ते लङ्घयन्ति ननु मातः! अलङ्घनी-याम्
 ब्रह्मा-आदि-भिः सुर-वरैः अपि काल-कक्ष्याम्॥१३॥

13. ye bhāvayantyamṛtavāhibhiranśujālai -
 rāpyāyamānabhuvanāmamṛteśvarīm tvām;
 te laṅghayanti nanu mātaraṅghaniyām
 brahmādibhiḥ suravarairapi kālakakṣyām.

यः स्फाटिकाक्षगुणपुस्तककुण्डिकाढ्यां
 व्याख्यासमुद्यतकरां शरदिन्दुशुभ्राम्।
 पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते
 मातः स विश्वकवितार्किकचक्रवर्ती॥१४॥

यः स्फाटिक-अक्षगुण-पुस्तक-कुण्डिका-आढ्यां
 व्याख्या-समुद्यत-करां शरद् इन्दु शुभ्राम्।
 पद्म आसनां च हृदये भवतीम् उपास्ते
 मातः! स विश्व-कवि तार्किक-चक्रवर्ती॥१४॥

14. yaḥ sphāṭikākṣagaṇapustaka kuṇḍikāḍhyām
 vyākhyāsmudyatakarām śaradinduśubhrām;
 padmāsanām ca hṛdaye bhavatīmupāste
 mātah sa viśvakavi-tārkikacakravartī.

बर्हावतंसयुतबर्बरकेशपाशां
 गुञ्जावलीकृतघनस्तनहारशोभाम्।
 श्यामां प्रवालवदनां सुकुमारहस्तां
 त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥१५॥

बर्ह अवतंस-युत बर्बर केश पाशाम्
 गुञ्जा-अवली-कृत घन-स्तन हार शोभाम्।
 श्यामां प्रवाल-वदनां सु-कुमार-हस्तां
 त्वां एव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥१५॥

15. barhāvataṁsayutabarbarkeśapāśām
 guñjāvalīkṛtaghanastanahāraśobhām;
 śyāmām pravālavadanām sukumārahastām
 tvāmeva naumi śavarīm śavarasya jāyām.

अर्धेन किं नवलताललितेन मुग्धे!
 क्रीतं विभोः परुषमर्धमिदं त्वयेति।
 आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये
 मन्दस्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति ॥१६॥

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे!
 क्रीतं विभोः परुषं अर्धं इदं त्वया इति।
 आली-जनस्य परिहास वचांसि मन्ये
 मन्द स्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति ॥१६॥

16. ardhena kim navalatālalitena mugdhe !
 krītam vibhoḥ paruṣamardhamidam tvayeti;
 ālijanasya parihāsavacānsi manye
 mandasmitena tava devi ! jaḍī bhavanti.

ब्रह्माण्डबुद्बुदकदम्बकसंकुलोऽयं
 मायोदधिर्विविधदुःखतरङ्गमालः।
 आश्चर्यमम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति
 त्वद्ध्यानसन्ततिमहावडवामुखाग्रौ॥१७॥

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलः अयम्
 माया उदधिः विविध दुःख तरङ्ग मालः।
 आश्चर्य अम्ब! झट् इति प्रलयं प्रयाति
 त्वद् ध्यान सन्तति महा वडवा मुख अग्रौ॥१७॥

17. brahmāṇḍa budbudakadambakasāṅkulo'yam
 māyodadhirvividhaduhkhatarāṅgamālah;
 āścaryamamba jhaṭīti pralayam prayāti
 tvaddhyānasantatimahāvaḍavāmukhāgnau.

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति
 कात्यायनीति कमलेति कलावतीति।
 एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
 सन्दृश्यते बहुविधा ननु नर्तकीव॥१८॥

दाक्षायणी इति गुहारणी इति
 कात्यायनी इति कमला इति कलावती इति।
 एका सती भगवती परमार्थतः अपि
 सं-दृश्यसे बहु-विधा ननु नर्तकी इव॥१८॥

18. dāksāyanīti kuṭileti guhāraṇīti
 kātyāyanīti kamaleti kalāvatīti;
 ekā satī bhagavatī paramārthato'pi
 sandrśyate bahuvidhā nanu nartakīva.

आनन्दलक्षणमनाहतनाम्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्रसलिलैः पुलकैश्च धन्याः॥१९॥

आनन्द-लक्षणम् अनाहत-नाम्नि देशे
नाद आत्मना परिणतं तव रूपं ईशे!
प्रत्यक् मुखेन मनसा परि-चीयमानं
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैः च धन्याः॥१९॥

19. ānandalakṣaṇamanāhatanāmni deśe
nādātmanā pariṇatam tava rupamīśe;
pratyaṇmukhena manasā paricīyamānam
śamsanti netrasalilaiḥ pulakaiśca dhanyāḥ.

त्वं चन्द्रिका शशिनि, तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
 त्वं चेतनासि पुरुषे, पवने बलं त्वम्।
 त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
 निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात्॥२०॥

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्म-रुचौ रुचिः त्वं
 त्वं चेतना असि पुरुषे पवने बलं त्वं।
 त्वं स्वादुता असि सलिले शिखिनि त्वं ऊष्मा
 निःसारम् एव निखिलं त्वत्-ऋते यदि स्यात्॥२०॥

20. tvam candrikā śāśini, tigmarucau rucistvam
 tvam cetanāsi puruṣe, pavane balam tvam;
 tvam svādutāsi salile śikhini tvamūṣmā
 niḥsārameva nikhilam tvadr̥te yadi syāt.

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं
 सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
 यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिरास्ते
 तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव॥२१॥

ज्योतींषि यत् दिवि चरन्ति यत् अन्तरिक्षं
 सूते पयांसि यत् अहिः धरणीं च धत्ते।
 यत् वाति वायुः अनलः यत् उदर्चिः आस्ते
 तत् सर्वं अम्ब! तव केवलं आज्ञया एव ॥२१॥

21. jyotīmṣi yaddivi caranti yadantarikṣam
 sūte payāmsi yadahirdharaṇīm ca dhatte;
 yadvāti vāyuranalo yadudarcirāste
 tatsarvamamba! tava kevalamājñayaiva.

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे! तदानीं
 वाक्-तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनामरूपा!
 यद्वा विकासमुपयासि यदा तदानीं
 त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥ २२ ॥

सङ्कोचं इच्छसि यदा गिरिजे! तदानीं
 वाक्-तर्कयोः त्वं असि भूमिः अनाम-रूपा।
 यत् वा विकासं उपयासि यदा तदानीम्
 त्वत् नाम-रूप-गणनाः सुकरी भवन्ति॥२२॥

22. saṅkocamicchasi yadā giriḥje ! tadānīm
 vāktarkayostvamasi bhūmīranāmarūpā!
 yadvā vikāsamupayāsi yadā tadānīm
 tvannāmarūpagaṇanā sukarī bhavanti.

भोगाय देवि! भवतीं कृतिनः प्रणम्य
 भ्रूकिंकरीकृतसरोजगृहा सहस्राः।
 चिन्तामणि प्रचयकल्पितकेलिशैले
 कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते॥२३॥

भोगाय देवि! भवतीं कृतिनः प्रणम्य
 भ्रूकिंकरी-कृत सरोज-गृहा-सहस्राः
 चिन्ता-मणि प्रचय कल्पित केलि-शैले
 कल्प-द्रुम-उपवन एव चिरं रमन्ते॥२३॥

23. bhogāya devi! bhavatīm kṛtinah praṇamya
 bhrūkiṅkarikṛtasarojagrḥā sahasrāḥ;
 cintāmaṇi pracayakalpitakeliśaile
 kalpadrumopavana eva ciram remante.

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे!
 संसारतापमखिलं दयया पशूनाम्।
 वैकर्तनीकिरणसंहतिरेव शक्ता
 घर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या॥२४॥

हन्तुं त्वं एव भवसि त्वत् अधीनं ईशे!
 संसार-तापं अखिलं दयया पशूनाम्।
 वैकर्तनी किरण संहतिः एव शक्ता
 घर्मं निजं शमयितुं निजया एव वृष्ट्या॥२४॥

24. hantum tvameva bhavasi tvadadhīnamīśe!
 sansāratāpamakhilam dayayā paśūnām;
 vaikartanīkīraṇasamhatireva śaktā
 gharmam nijam śamayitum nijayaiva vṛṣṭyā.

शक्तिः शरीरमधिदैवतमन्तरात्मा
 ज्ञानं क्रिया करणमासनजालमिच्छा।
 ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं
 किं तन्न यद्भवसि देवि! शशाङ्कमौलेः॥२५॥

शक्तिः शरीरं अधि-दैवतं अन्तर आत्मा
 ज्ञानं क्रिया करणं आसन-जालं इच्छा।
 ऐश्वर्यं आयतनं आवरणानि च त्वं
 किं तत् न यत् भवसि? देवि! शशाङ्क-मौलेः॥२५॥

25. śaktiḥ śarīramadhidaivatamantarātmā
 jñānam kriyā karaṇamāsanajālamīcchā;
 aiśvaryamāyatanamāvaraṇāni ca tvam
 kim tanna yadbhavasi devi! śaśāṅkamauleḥ.

भूमौ निवृत्तिरुदिता पयसि प्रतिष्ठा
 विद्याऽनले मरुति शान्तिरतीतशान्तिः।
 व्योम्नीति याः किल कला कलयन्ति विश्वं
 तासां विदूरतरमम्ब! पदं त्वदीयम्॥२६॥

भूमौ निवृत्तिः उदिता पयसि प्रतिष्ठा
 विद्या अनले मरुति शान्तिः अतीत-शान्तिः।
 व्योम्नि इति या किल कलाः कलयन्ति विश्वं
 तासां विदूर-तरं अम्ब! पदं त्वदीयम्॥२६॥

26. bhumau nivṛttiruditā payasi pratiṣṭhā
 vidyā'nale maruti śāntiratītaśāntiḥ;
 vyomnīti yāḥ kila kalā kalayanti viśvam
 tāsām vidūratarāmba ! padam tvadīyam.

यावदत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
 नाङ्गीकरोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
 तावद्विकल्प जटिलाः कुटिलप्रकारा-
 स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

यावत् पदं पद-सरोज-युगं त्वदीयम्
 न अङ्गी-करोति हृदयेषु जगत्-शरण्ये!
 तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल-प्रकाराः
 तर्क-ग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

27. yāvatpadam padasarojayugam tvadīyam
 nāṅgīkaroti hṛdayeṣu jagaccharaṇye;
 tāvadvikalpa jatilāḥ kuṭilaparakārā -
 starkagrahāḥ samayinām pralayam na yānti.

यद्देवयानपितृयानविहारमेके
 कृत्वा मनः करणमण्डलसार्वभौमम्।
 याने निवेश्य तव कारणपञ्चकस्य
 पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम्॥२८॥

यत् देवयान पितृयान विहारं एके
 कृत्वा मनः करण-मण्डल सार्व-भौमम्।
 याने निवेश्य तव कारण-पञ्चकस्य
 पर्वाणि पार्वति ! नयन्ति निज आसनत्वम्॥२८॥

28. yaddevayānapitṛyānavihārameke
 kṛtvā manah karaṇamaṇḍalasārvabhaumam;
 yāne niveśya tava kāraṇapañcakasya
 parvāṇi pārvati nayanti nijāsanatvam.

स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
 कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब यस्याः।
 पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
 सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम्॥२९॥

स्थूलासु मूर्तिषु मही प्रमुखासु मूर्तेः
 कस्याः च न अपि तव वैभवं अम्ब! यस्याः।
 पत्या गिराम् अपि न शक्यत एव वक्तुं
 सा असि स्तुता किल मया इति तितिक्षितव्यम्॥२९॥

29. sthūlāsu mūrṭiṣu mahīpramukhāsu mūrteḥ;
 kasyāscanā 'pi tava vaibhavamamba yasyāḥ;
 patyā girām'pi na śakyata eve vaktum
 sāsī stutā kila mayeti titikṣitavyam.

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब! षडध्वशुद्धा-
 वाप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम्।
 श्यामां घनस्तनतटां सकलीकृतौ च
 ध्यायन्त एव जगतां गुरुवो भवन्ति॥३०॥

काल अग्नि-कोटि-रुचिम् -अम्ब! षट् अध्व शुद्धौ
 अप्लावनेषु भवतीम् अमृत-औघ वृष्टिम्।
 श्यामां घन-स्तन-तटां सकली कृतौ च
 ध्यायन्तः एव जगतां गुरुवः भवन्ति॥३०॥

30. kālāganikoṭirucimamba ! ṣaḍadhvaśuddhā-
 vāplāvaneṣu bhavatīmamṛtaughavrṣtim;
 śyāmām ghanastanataṭām sakalī kṛtau ca
 dhyāyanta eva jagatām guruvo bhavanti.

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचि-
दानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥३१॥

विद्यां परां कतिचित् अम्बरम् अम्ब! केचित्
आनन्दम् एव कतिचित् कतिचित् च मायाम्।
त्वां विश्वं आहुः अपरे वयम् आमनाम
साक्षात् अपार करुणां गुरु-मूर्ति एव ॥३१॥

31. vidyām parām katicidambaramamba kecit
ānandameva katicitkaticitca māyām;
tvām viśvamāhurapare vayamāmanāma
sākṣādapāraḥkaruṇām gurumūrtimeva.

कुवलयदलनीलं बर्बरस्निग्धकेशं
 पृथुतरकुचभाराक्रान्तकान्तावलग्रम्।
 किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपं परं नः
 सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ताम्॥३२॥

कुवलय-दल-नीलं बर्बर स्निग्ध-केशं
 पृथुतर-कुच-भार आक्रान्त कान्त अवलग्रम्।
 किं इह बहुभिः उक्तैः त्वत् स्वरूपं परं नः
 सकल-भुवन-मातः! सन्ततं सन्नि-धत्ताम्॥३२॥

32. kuvalayadalanīlam barbarasnigdhakeśam
 pr̥thutarakucabhārākrāntakāntāvalagnam;
 kimiha bahubhiruktaistvatsvarūpam param naḥ
 sakalabhuvanamātaḥ santatam sannidhattām.

ॐ

अथ सकलजननीस्तवः पञ्चमः .

नमः सकलजनन्यै

अजानन्तो यान्ति क्षयमवशमन्योन्यकलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्मज्वरभयतमः कौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्॥१॥

अजानन्तः यान्ति क्षयं अवशं अन्योन्य-कलहैः
अमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगत्-मातः! जन्म-ज्वर-भय-तमः कौमुदि वयं
नमः ते कुर्वाणाः शरणम् उपयामः भगवतीम् ॥१॥

1. ajānanto yānti kṣayamavaśamanyonikalahai -
ramī māyāgranthau tava pariluṭhantaḥ samayinaḥ;
jaganmātarjanmajvarabhayaatamah kaumudi! vayam
namaste kurvāṇāḥ śaraṇamupayāmo bhagavatīm.

वचस्तर्कागम्यस्वरसपरमानन्दविभव-
 प्रबोधाकाराय द्युतिदलित नीलोत्पलरुचे।
 शिवस्याराध्याय स्तनभरविनम्राय सततं
 नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुग्धाय महसे॥२॥

वचः तर्क अगम्य स्वरस परम-आनन्द-विभव
 प्रबोध आकाराय द्युति तुलित नील उत्पल रुचि ।
 शिवस्य आराध्याय स्तन-भर विनम्राय सततं
 नमः यस्मै-कस्मै-चन भवतु मुग्धाय महसे॥२॥

2. vacastarkāgamyasvarasaparamānanda vibhava -
 prabodhākārāya dyutidalita nīlotpala ruce;
 śivasyārādhyāya stanabharavinamrāya satatam
 namo yasmai kasmaicana bhavatu mugdhāya mahase.

लुठद्गुञ्जाहारस्तनभरनमन्मध्यलतिका-
मुदञ्चद्वर्माभः कणगुणितनीलोत्पलरुचम्।
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकारगुणितं
शिवामन्वग्यान्तीं शवरमहमन्वेमि शवरीम्॥३॥

लुठत् गुञ्जा-हार-स्तन-भर नमन् मध्य-लतिकाम्
उदञ्चत् घर्माभः कण गुणित नील-उत्पल-रुचम्।
शिवं पार्थ-त्राण प्रवण मृगया आकार गुणितं
शिवां अन्वक्-यान्तीं शवरं अहं अन्वेमि शवरीम्॥३॥

3. luṭhad-guñjāhāraṣṭanabharanamamāmadhyalatikā -
mudañcadgharmāmbhaḥ kaṇaguṇitanīlotpalarucam;
śivam pārthatrāṇapraṇaṇamṛgayākāraguṇitam
śivāmanvagyāntīm śavaramahamanvemi śavarīm .

मिथः केशाकेशिप्रधननिधनास्तर्कघटना
 बहुश्रद्धाभक्तिप्रणयविषयाश्चाप्तविधयः।
 प्रसीद प्रत्यक्षीभव गिरिसुते! देहि शरणं
 निरालम्बं चेतः परिलुठति पारिप्लवमिदम्॥४॥

मिथः केशा-केशि प्रधन निधनाः तर्क-घटना
 बहु-श्रद्धा-भक्ति प्रणय-विषयाः च आप्त विधयः।
 प्रसीद प्रत्यक्षी-भव गिरि-सुते! देहि शरणं
 निर्-आलम्बं चेतः परि-लुठति पारिप्लवं इदम्॥४॥

4. mithaḥ keśākeśipradhananidhanāstarkaghaṭanā
 bahuśradhābhaktipraṇayaviśayāścāptavidhayah;
 prasīda pratyakṣībhava girisute! dehi śaraṇam
 nirālabham cetaḥ pariluṭhati pāriplavamidam.

शुनां वा वह्नेर्वा खगपरिषदो वा यदशनं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाह्नाय वपुषि
प्रपद्येथाश्चेतः सकलजननीमेव शरणम्॥५॥

शुनां वा वह्नेः वा खग-परिषदः वा यत् अशनं
कदा केन क्व इति क्वचित् अपि न कश्चित् कलयति।
अमुष्मिन् विश्वासं विजहि हि मम अह्नाय वपुषि
प्रपद्येथाः चेतः सकल-जननीं एव शरणम्॥५॥

5. śunām vā vahnervā khagapriṣado vā yadaśanam
kadā kena kveti kvacidapi na kaṣcit kalayati;
amuṣmin viśvāsam vijahihi mamāhnāya vapuṣi
prapadyethāścetaḥ sakalajananīmeva śaraṇam .

अनाद्यन्ताभेदप्रणयरसिकापि प्रणयिनी
 शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि! गृहिणी।
 सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैलतनया
 तदेतत्संसारप्रणयनमहानाटकसुखम्॥६॥

अन्-आद्यन्ता भेद-प्रणय-रसिका अपि प्रणयिनी
 शिवस्य आसीः यत् त्वं परिणय-विधौ देवि! गृहिणी।
 सवित्री भूतानाम् अपि यत् उदभूः शैल तनया
 तत् एतत् संसार प्रणयन महा-नाटक सुखम्॥६॥

6. anādyantābhedapraṇayarasikāpi praṇayinī
 śivasyāsīryattvam pariṇayavidhau devi! gṛhiṇī;
 savitrī bhūtānāmapi yadudabhuh śailatanayā
 tadetat saṁsārapraṇayanamahānāṭaka sukham .

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः! प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः।
परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि! सुधिय-
स्तदेतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे! ॥७॥

ब्रुवन्ति एके तत्त्वं भगवति! सत् अन्ये विदुः असत्
परे मातः! प्राहुः तव सत् असत् अन्ये सुकवयः।
परे न एतत् सर्वं सम-अभि-दधते देवि! सु-धियः
तत् एतत् त्वत् माया विलसितं अशेषं ननु शिवे ॥७॥

7. bruvantyeke tattvam bhagavati ! sadanye vidurasat
pare mātah! prāhustava sadasadanye sukavayah;
pare naitatsarvam samabhidadhate devi! sudhiya -
stadetat tvanmāyāvilasitamāśeṣam nanu śive!

तडित्कोटिज्योतिर्द्युतिदलितषड्ग्रन्थिगहनं
 प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिवपुषा।
 किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूतमनिशं
 भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बरकचम् ॥८॥

तडित् कोटि-ज्योतिः द्युति-दलित षड्-ग्रन्थि-गहनं
 प्रविष्टं स्वाधारं पुनः अपि सुधा-वृष्टि वपुषा।
 किम् अपि अष्टा-त्रिंशत् किरण सकली भूतं अनिशं
 भजे धाम श्यामं कुच-भर-नतं बर्बर कचम् ॥८॥

8. taditkotijyotirdhyutidalitaṣaḍgranthigahanam
 praviṣṭam svādhāram punarapi sudhāvr̥ṣṭivapuṣā;
 kimapyasṭātrimśat kiraṇasakalībhūtamanīsam
 bhaje dhāma śyāmam kucabharanatam barbarakacam .

चतुष्पत्रान्तः षड्दलभगपुटान्तस्त्रिवलय-
स्फुरद्विद्युद्वह्निद्युमणिनियुताभद्युतियुते।
षडश्रंभित्वादौ दशदलमथ द्वादशदलं
कलाश्रं च द्वयश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥९॥

चतुष्पत्र-अन्तः षड्-दल भग-पुट-अन्तः त्रिवलय-
स्फुरत् विद्युत्-वह्नि-द्युमणि-नियुताभ-द्युति-युते!
षट् अश्रं भित्त्वा आदौ दश-दलं अथ द्वादश-दलं
कला अश्रं च द्विअश्रं गतवति नमस्ते गिरि-सुते॥९॥

9. catuspatrāntaḥ ṣaḍdalabhagapuṭāntastrivalaya -
sphuradvidyudvahni dyumaṇinīyutābhadhyutiyute;
ṣaḍaśrambhitvādaś dāśadalamathadvādaśadalam
kalāśram ca dvyaśram gatavati namaste girisute .

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः
 परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमपरे।
 चतुर्णामप्येषामुपरि किमपि प्राहुरपरे
 महामाये! तत्त्वं तव कथममी निश्चिनुमहे॥१०॥

कुलं के-चित् प्राहुः वपुः अकुलं अन्ये तव बुधाः
 परे तत्-संभेदं सम्-अभि-दधते कौलं अपरे।
 चतुर्णां अपि एषां उपरि किं अपि प्राहुः अपरे
 महामाये! तत्त्वं तव कथं अमी निश्चिनुमहे॥१०॥

10. kulam kecitprāhurvapurakulamanye tava budhāḥ
 pare tatsambhedam samabhidadhate kaulamapare;
 caturṇāmapyēṣāmupari kimapi prāhurapare
 mahāmāye! tattvam tava kathamamī niścinumahe .

षडध्वारण्यानीं प्रलयरविकोटिप्रतिरुचा
 रुचा भस्मीकृत्य स्वपदकमलप्रह्वशिरसाम्।
 वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः
 कुचाभ्यामानम्रः शिवपुरुषकारो विजयते॥११॥

षट्-अध्व-अरण्यानीं प्रलय-रवि-कोटि प्रति-रुचा
 रुचा भस्मी-कृत्य स्व-पद-कमल-प्रह्व-शिरसाम्।
 वितन्वानः शैवं किम् अपि वपुः इन्दीवर -रुचिः
 कुचाभ्यां आनम्रः शिव पुरुष-कारः विजयते॥११॥

11. ṣaḍadhwāranyānīm pralayaravikoṭipratirucā
 rucā bhasmīkṛtya svapada kamalaprahvaśīrasām;
 vitanvānaḥ śaivam kimapi vapurindīvararuciḥ
 kucābhyāmānamraḥ śivapuruṣakāro vijayate .

प्रकाशानन्दाभ्यामविदितचरीं मध्यपदवीं
 प्रविश्यैतद्वन्द्वं रविशशिसमाख्यं कवलयन्।
 प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहनभस्मीकृतकुलः
 प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमम्ब ! प्रविशति॥१२॥

प्रकाश-आनन्दाभ्यां अविदित-चरीं मध्य-पदवीं
 प्रविश्य एतत् द्वन्द्वं रवि-शशि-समाख्यं कवलयन्।
 प्रविश्य ऊर्ध्वं नादं लय-दहन-भस्मी-कृत-कुलः
 प्रसादात् ते जन्तुः शिवं-अकुलं अम्ब ! प्रविशति॥१२॥

12. prakāśānandābhyāmaaviditacarīm madhyapadavīm
 praviśyaitaddvandvam raviśaśisamākhyam kavalayan;
 praviśyordhvam nādam layadahana bhasmī kṛtakulaḥ
 prasādātte jantuh śivamakulamamba ! praviśati .

प्रियङ्गुश्यामाङ्गीमरुणतरवासः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफलबहुलनेपथ्यकुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फारस्तवकनमितां कल्पलतिकां
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिवचिन्तामणिपदम्॥१३॥

प्रियङ्गुश्याम-अङ्गीं अरुणतर-वासः किसलयां
सम-उन्मीलत् मुक्ता-फल बहुल-नेपथ्य-कुसुमाम्।
स्तन-द्वन्द्व-स्फार-स्तवक-नमितां कल्प-लतिकां
सकृत् ध्यायन्तः त्वां दधति शिव-चिन्तामणि-पदम्॥१३॥

13. priyaṅguśyāmāṅgīmaruṇataravāsaḥ kisalayām
samunmīlanmuktāphalabahulanepathyakusumām;
stanadvandvasphārastavakanamitām kalpalatikām
sakṛddhyāyantaśtvām dadhati śivacintāmaṇipadam.

षडाधारावर्तैरपरिमितमन्त्रोर्मिपटलै-
 श्लन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद्दैवतझषैः।
 क्रमस्त्रोतोभिस्त्वं वहसि परनादामृतनदीं
 भवानि! प्रत्यग्रा शिवचिदमृताब्धिप्रणयिणी॥१४॥

षट्-आधार आवर्तैः अपरिमित-मन्त्र ऊर्मि-पटलैः
 चलत् मुद्रा-फेनैः बहु-विध लसत् दैवत-झषैः।
 क्रम-स्त्रोतोभिः त्वं बहसि पर-नाद अमृत नदीं
 भवानि! प्रत्यग्रा शिव-चित् अमृत अब्धि प्रणयिणी॥१४॥

14. ṣaḍādhārāvartai'raparimitamantromipāṭalai -
 ścalanmudrāphenairbahuvidhalasaddaivatajhaṣaiḥ;
 kramasrotobhistvam vahasi paranādāmṛtanadīm
 bhavāni! pratyagrā śivacidamṛtābdhipraṇayanī .

महीपाथोवह्नि श्वसनवियदात्मेन्दुरविभि-
 र्वपुर्भिर्ग्रस्तांशैरपि तव कियानम्ब ! महिमा।
 अमून्यालोक्ष्यन्ते भगवति! न कुत्राप्यणुतरा-
 मवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योमवपुषि ॥१५॥

मही पाथः वह्नि श्वसन वियत् आत्मा इन्दु-रविभिः
 वपुर्भिः ग्रस्त अंशैः अपि तव कियान् अम्ब! महिमा।
 अमूनि आलोक्ष्यन्ते भगवति! न कुत्र अपि अणुतरां-
 अवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परम-व्योम-वपुषि॥१५॥

15. mahīpāthovahni śvasanaviyadātmenduravibhir -
 vapurbhirgrastāṁśairapi tava kiyānamba! mahimā;
 amūnyālokyante bhagavati! na kutrāpyaṇutarā -
 mavasthām prāptāni tvayi tu paramavyomavapuṣi .

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
 भवाम्भोधौमग्रं त्रिगुणलहरीकोटिलुठितम्।
 कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः! करुणया
 शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥१६॥

मनुष्याः तिर्यञ्चः मरुतः इति लोक-त्रयं इदं
 भव अम्भोधौ-मग्रं त्रिगुण-लहरी कोटि लुठितम्।
 कटाक्षः चेत् अत्र क्वचन तव मातः! करुणया
 शरीरी सद्यः अयं व्रजति परमानन्द-तनुताम्॥१६॥

16. manuṣyāstiryañco maruta iti lokatrayamidam
 bhavāmbhodhaumagnam triguṇa laharīkoṭi luṭhitam;
 kaṭākṣaścedatra kvacana tava mātah ! karuṇayā
 śarīrī sadyo'yam vrajati paramānadatanutām .

कलां प्रज्ञामाद्यां समयमनुभूतिं समरसां
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतिं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः॥१७॥

कलां प्रज्ञां आद्यां समयं अनुभूतिं सम-रसां
गुरुं पारम्पर्यं विनयं उपदेशं शिव-कथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परमं अनुभूतिं पर-गुहां
विधिं विद्यां आहुः सकल-जननीं एव मुनयः॥१७॥

17. kalām prajñāmādyām samayamanubhūtim samarasām
gurum pāraṃparyam vinayamupadeśam śiva kāthām;
pramāṇam nirvāṇam paramamatibhūtim paraguhām
vidhim vidyāmāhuḥ sakalajananīmeva munayaḥ.

प्रलीने शब्दौघे तदनु विरते बिन्दुविभवे
 ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनि वपुरुपाधिन्युपरते।
 श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलितचिन्मात्र गहनां
 स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम्॥१८॥

प्रलीने शब्द औघे तत् अनु विरते बिन्दु-विभवे
 ततः तत्त्वे च अष्ट-ध्वनिभिः अन्-उपाधिनि उपरते।
 श्रिते शाक्ते पर्वणि अनु-कलित चिन्-मात्र गहनां
 स्व-संवित्तिं योगी रसयति शिव आख्यां पर तनुम्॥१८॥

18. praline śabdaughe tadanu virate bindu vibhave
 tatastattve cāṣṭadhvani vapurupādhinyuparate;
 śrite śakte parvaṇyanukalita cinmātragahanām
 svasamvittim yogī rasayati śivākhyām paratanum .

परानन्दाकारां निरवधिशिवैश्वर्यवपुषं
निराकारज्ञान प्रकृतिमनवच्छिन्नकरुणाम्।
सवित्रीं लोकानां निरतिशयधामास्पदपदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेवभजताम्॥१९॥

परानन्दः आकरां निर्-अवधि शिव-ऐश्वर्य वपुषं
निराकार ज्ञान प्रकृतिं अन्-अवच्छिन्न करुणाम्।
सवित्रीं भूतानां निर्-अतिशय धाम आस्पद-पदां
भवः वा मोक्षः वा भवतु भवतीं एव भजताम्॥१९॥

19. parānandākārām niravadhiśivaiśvaryavapuṣam
nirākārajñānaprakṛtīmanavacchinnakarūṇām;
savitrīm lokānām niratiśayadhāmāspadapadām
bhavo vā mokṣo vā bhavatu bhavatīmevabhajatām .

जगत्काये कृत्वा तमपि हृदये तच्च पुरुषे
 पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्यगहने।
 तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्दविभवे
 महाव्योमाकारे ! त्वदनुभवशीलो विजयते॥२०॥

जगत् काये कृत्वा तं अपि हृदये तत् च पुरुषे
 पुमांसं बिन्दुस्थं तं अपि पर-नाद आख्य गहने।
 तत् एतत् ज्ञान आख्ये तत् अपि परमानन्द विभवे
 महा-व्योम-आकारे ! त्वत् अनुभवशीलो विजयते॥२०॥

20. jagatkāye kṛtvā tamapi hṛdaye tacca puruṣe
 pumāṁsam bindustham tamapi paranādākhyagahane;
 tadetatjñānākhye tadapi paramānandavibhave
 mahāvvyomākāre ! tvadanubhavaśīlo vijayate .

विधे विद्ये वेद्ये विविधसमये वेदजननि!
 विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेदगुलिके।
 शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे
 शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम्॥२१॥

विधे! विद्ये! वेद्ये! विविध-समये! वेद-जननि
 वि-चित्रे! विश्व-आद्ये! विनय-सुलभे! वेद-गुलिके!
 शिव-आज्ञे! शीलस्थे! शिव-पद-वदान्ये! शिव-निधे!
 शिवे! मातः! मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निर्-उपमाम्॥२१॥

21. vide vidye vedye vividhasamaye vedajanani !
 vicitre viśvādye vinayasulabhe vedagulike;
 śivājñe śīlasthe śivapadavadānye śivanidhe
 śive mātarmahyam tvayi vitara bhaktim nirupamām .

विधेर्मुण्डं हत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
 हरि शूलप्रोतं यदऽगमयदंसाभरणताम्।
 अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब ! गिरिशः
 शिवस्थायाः शक्तेस्तदिदमखिलं ते विलसितम्॥२२॥

विधेः मुण्डं हत्वा यत् अकुरुत पात्रं करतले
 हरिं शूल-प्रोतं यत्-अगमयत् अंस आभरणताम्।
 अलं चक्रे कण्ठं यत् अपि गरलेन अम्ब ! गिरिशः
 शिवस्थायाः शक्तेः तत् इदं अखिलं ते विलसितम्॥२२॥

22. vidhermunḍam hr̥tvā yadakuruta pātram karatale
 harim śūlaprotam yada'gamayadamśābharanatām;
 alamcakre kaṇṭham yadapi garalenāmba! giriśaḥ
 śivasthāyāḥ śaktestadidamakhilam te vilasitam .

विरिञ्चयाख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी
त्वमेवैकाऽनेका भवसि कृतिभेदैर्गिरिसुते!॥२३॥

विरिञ्चि आख्या मातः! सृजसि हरि-संज्ञा त्वं अवसि
त्रिलोकीं रुद्र-आख्या हरसि विदधासि ईश्वर दशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाश-औघ दलिनी
त्वं एव एका अनेका भवसि कृति-भेदैः गिरि-सुते!॥२३॥

23. viriñcākhyā mātah! srjasi harisanjñā tvamavasi
trilokīm rudrākhyā harasi vidadhāśīśvaradaśām;
bhavanti sādākhyā śivayasi ca pāśaughadalīnī
tvamevaikā'nekā bhavasi kṛtibhedairgirisute!

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मना-
 गऽशक्ये संस्पृष्टं चकितचकितैरम्ब! सततम्।
 श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृतिकठिनाः कोमलतरे
 कथं ते विन्दन्ते पदकिसलये पार्वति! पदम् ॥२४॥

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदित-कषायैः अपि मनाक्
 अशक्ये संस्पृष्टं चकित चकितैः अम्ब! सततम्।
 श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिना कोमल-तरे
 कथं ते विन्दन्ते पद-किसलये पार्वति! पदम् ॥२४॥

24. muninām cetobhiḥ pramṛditakaṣāyairapi manāk
 aśakye samspraṣṭum cakitacakitairamba! satatam;
 śrutinām mūrdhānaḥ prakṛtikathināḥ komalatare
 katham te vindante padakisalaye pārvati! padam .

तडिद्वल्लीं नित्याममृत सरितं पाररहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमगुणग्रन्थिगहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामऽविनतकुचां विश्वजननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम्॥२५॥

तडित्-वल्लीं नित्यां अमृत सरितं पार-रहितां
मल-उत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिं अगुणग्रन्थि गहनाम्।
गिरां दूरां विद्यां अविनत-कुचां विश्व-जननीम्
अपर्यन्तां लक्ष्मीं अभि-दधति सन्तः भगवतीम्।२५।

25. taḍitvallīm nityāmamṛta saritam pārarahitām
malotīrṇām jyotsnām prakṛtim agunagranthigahanām;
girām dūrām vidyām'vinatakucām viśvajananīm
aparyantām lakṣmīm abhidadhatīsanto bhagavatīm .

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृतिरचितं केवलमिदं
 सुखं दुःखं चायं कलयति पुमांश्चेतन इति।
 स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
 शरीराहंकारं तव समयबाह्यो गिरिसुते! ॥२६॥

शरीरं क्षिति अम्भः प्रभृति रचितं केवलं इदं
 सुखं दुःखं च अयं कलयति पुमान् चेतनः इति।
 स्फुटं जानानः अपि प्रभवति न देही रहयितुं
 शरीर-अहंकारं तव समय-बाह्यः गिरि-सुते! ॥२६॥

26. śarīram kṣityambhaḥ prabhṛtiracitam kevalamidam
 sukham duḥkham cāyam kalayati pumānścetana iti;
 sphuṭam jānāno'pi prabhavati na dehī rahayitum
 śarīrāhaṅkāram tava samayabāhyo girisute!

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सद्य गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी॥२७॥

पिता माता भ्राता सुहृत् अनुचरः सद्य गृहिणी
वपुः पुत्रः मित्रं धनं अपि यदा मां विजहति।
तदा ये भिन्दाना सपदि भय मोह अन्ध-तमसं
महा-ज्योत्स्ने! मातः! भव करुणया सन्निधि-करी॥२७॥

27. *pitā mātā bhrātā suhr̥danucaraḥ sadma gr̥hiṇī*
vapuḥ putro mitram dhanamapi yadā mām vijahati;
tadā me bhindāna sapadi bhayamohāndatamasam
mahājyotsne! mātārbhava karuṇayā sannidhikarī .

सुता दक्षस्यादौ किल सकलमातस्त्वमुदभूः
 सदोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
 अनाद्यन्ता शम्भोरपृथगपि शक्तिर्भगवती
 विवाहाज्जायासीत्यहह चरितं वेत्ति तव कः॥२८॥

सुता दक्षस्य आदौ किल सकल-मातः ! त्वं उदभूः
 सदोषं तं हित्वा तत् अनु गिरि-राजस्य तनया।
 अन्-आद्य-अन्ता शम्भोः अ-पृथक् अपि शक्तिः भगवती
 विवाहात् जाया असि इति अहह चरितं वेत्ति तव कः॥२८॥

28. *sutā dakṣasyādau kila sakalamātaśtvamudabhuh
 sadoṣam tam hitvā tadanu girirājasya tanayā;
 anādyantā śambhoraprthagapi śaktirbhagavatī
 vivāhājāyāsītyahaha caritam vetti tava kaḥ.*

कणास्त्वद्दीप्तीनां रविशशिकृशानुप्रभृतयः
 परं ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमानन्दकणिका।
 शिवादिक्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदरे
 तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति॥२९॥

कणः त्वत् दीप्तीनां रवि-शशि-कृशानु प्रभृतयः
 परं ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतं आनन्द कणिका।
 शिव-आदि-क्षिति-अन्तं त्रि-वलय-तनोः सर्व उदरे
 तव आस्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति॥२९॥

29. kaṇāstvaddīptīnām raviśaśikṛśānuprabhṛtayaḥ
 param brahma kṣudram tava niyatamānandakaṇikā;
 śivādikṣityantam trivalayatanoḥ sarvamudare
 tavāste bhaktasya sphurasi hr̥di citram bhagavati!

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
 त्वयैवेच्छत्यम्ब! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
 गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती
 तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम्॥३०॥

त्वया यः जानीते रचयति भवत्या एव सततं
 त्वया एव इच्छति अम्ब! त्वं अपि निखिलाः यस्य तनवः।
 गतः साम्यं शम्भुः वहति परमं व्योम भवती
 तथा अपि एवं हित्वा विहरति शिवस्य इति किं इदम्॥३०॥

30. tvayā yo jānīte racayati bhavatyaiva satatam
 tvayaivecchtyamba! tvamasi nikhilā yasya tanavaḥ;
 gataḥ sām̐yam śambhurvahati paramam vyoma bhavatī
 tathāpyevam hitvā viharati śivasyeti kimidam .

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमगुहम्।
दवीयो नेदीयः सदसदिति विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीम्॥३१॥

पुरः पश्चात् अन्तर् बहिः अपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलं अकुलं गुह्यं अगुहम्।
दवीयः नेदीयः सत् असत् इति विश्वं भगवतीम्
सदा पश्यन्ति आज्ञां वहसि भुवन क्षोभ जननीम्॥३१॥

31. purah paścādantarbahiraparimeyam parimitam
param sthūlam sūkṣmam sakulamakulam guhyamaguham;
davīyo nedīyaḥ sadasaditi viśvam bhagavatīm
sadā paśyantyājñām vahasi bhuvanakṣobha jananīm .

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः
 पयोधौ कल्लोलप्रतिहतमहिम्नीव पृषतः।
 उदेत्योदेत्याम्ब! त्वयि सह निजैस्तात्त्विककुलै-
 र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममनुकल्पं परवशाः ॥३२॥

मयूखाः पूष्णि इव ज्वलन इव तत् दीप्ति-कणिकाः
 पयोधौ कल्लोल प्रतिहत-महिम्नि इव पृषतः।
 उदेत्य उदेत्य अम्ब! त्वयि सह निजैः तात्त्विक-कुलैः
 भजन्ते तत्त्व औघाः प्रथमं अनु-कल्पं पर-वशाः ॥३२॥

32. mayūkhāḥ pūṣṇīva jvalana iva taddīptikanikāḥ
 payodhau kallolapratihatamahimnīva pṛṣataḥ;
 udetyodetyāmba ! tvayi saha nijaistāttvikakulair -
 bhajante tattvaughāḥ praśamamanukalpam paravaśāḥ.

विधुर्विष्णुर्ब्रह्माप्रकृतिरणुरात्मादिनकरः
 स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः।
 शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां
 विकल्पैरेभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम्॥३३॥

विधुः विष्णुः ब्रह्मा प्रकृतिः अणु आत्मा दिनकरः
 स्वभावः जैनेन्द्रः सुगत-मुनिः आकाशं अनिलः।
 शिवः शक्तिः च इति श्रुति-विषयतं तां उपगतां
 विकल्पैः एभिः त्वां अभिदधति सन्तः भगवतीम्॥३३॥

33. vidhurviṣṇurbrahmā prakṛtiraṇurātmādinakaraḥ
 svabhāvo jainendraḥ sugatamunirākāśamanilaḥ;
 śivaḥ śaktiśceti śrutiviṣayatām tāmupagatām
 vikalpairebhistvāma'bhidadhati santo bhagavatīm .

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया दैशिकदृशा
 षडध्वध्वान्तौघच्छिदुरगणनातीतकरुणाम्।
 परानन्दाकारां सपदि शिवयन्तीमपि तनुं
 स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम्॥३४॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहज-दयया दैशिक-दृशा
 षट् अध्व ध्वान्त औघ छिदुर-गणना-अतीत करुणाम्।
 परानन्द आकारा सपदि शिवयन्तीं अपि तनुं
 स्वम् आत्मानं धन्याः चिरम् उप-लभन्ते भगवतीम्॥३४॥

34. praviśya svam mārgam sahajadayyā daiśikadrśā
 ṣaḍadhvadhvāntaughacchiduragaṇanātītakarūṇām;
 parānandākārām sapadi śivayantīmapi tanum
 svamātmānam dhanyāściramupalabhante bhagavatīm .

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
 त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः।
 अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
 पृथक् तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे॥३५॥

शिवः त्वं शक्तिः त्वं त्वं असि समया त्वं समयिनी
 त्वं आत्मा त्वं दीक्षा त्वं अयं अणिमा आदिः गुण-गणः।
 अविद्या त्वं विद्या त्वं असि निखिलं त्वं किं अपरम्
 पृथक् तत्त्वं त्वत्तो भगवति! न वीक्षामह इमे॥३५॥

35. śivastvam śaktistvam tvamasi samayā tvam samayinī
 tvamātmā tvam dīkṣā tvamayamaṇīmādirguṇagaṇaḥ;
 avidyā tvam vidyā tvamasi nikhilam tvam kimaparam
 prthaktattvam tvatto bhagavati ! na vikṣāmaha ime .

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्मविलया-
 द्गते जन्मन्यन्तं गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
 अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवा-
 न्नयेयं त्वत्पूजास्तुतिविरचनेनैव दिवसान्॥३६॥

असंख्यैः प्राचीनैः जननि! जननैः कर्म विलयात्
 गते जन्मनि अन्तः गुरु-वपुषं आसाद्य गिरिशम्।
 अवाप्य आज्ञां शैवीं क्रमतनुः अपि त्वां विदित-वान्
 नयेयं त्वत् पूजा-स्तुति विरचनेन एव दिवसान्॥३६॥

36. asaṅkhyaiḥ prācīnairjanani jananaīḥ karmavilayāt
 gate janmanyantam guruvapuṣamāsādyā giriśam;
 avāpyājñām śaivīm kramatanurapi tvām viditavān
 nayeyam tvatpūjāstutiviracanenaiva divasān .

यत्षट्पत्रं कमलमुदितं तस्य या कर्णिकाख्या-
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरेयत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनताङ्कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकलजननींसन्ततं भावयामि॥३७॥

यत् षट्-पत्रं कमलं उदितं तस्य या कर्णिका-आख्या
योनिः तस्याः प्रथितं उदरेयत् तत् ओं कार-पीठम्।
तस्मिन् अन्तः कुच-भर-नताङ्कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्याम आकारां सकल-जननींसन्ततं भावयामि ॥३७॥

37. yatṣaṭpatram kamalamuditam tasya yā karṇikākhyā-
yonistasyāḥ prathitamudareyattadomkārapīṭham;
tasminna'ntaḥ kucabharanatām kuṇḍalītaḥ pravṛttām
śyāmākārām sakalajanānīmsantatam bhāvayāmi .

भुवि पयसि कृशानौमारुते खे शशाङ्के
 सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका।
 वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
 सकलजननि! सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम्॥३८॥

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
 सवितरि यजमाने अपि अष्टधा शक्तिः एका ।
 वहति कुच-भराभ्यां या विनम्रा अपि विश्वं
 सकल-जननि! सा त्वं पाहि मां इति अवश्यम्॥३८॥

38. bhuvi payasi kṛśānaumārute khe śaśāṅke
 savitari yajamāne'pyaṣṭadhā śaktirekā;
 vahati kucabharābhyām yā vinamrāpi viśvam
 sakalajanani ! sā tvam pāhimāmityaśyaṃ :

इति श्री पञ्चस्तव्यां सकलजननीस्तवः पञ्चमः॥

इति श्रीमद्भार्याचार्यविरचिता पञ्चस्तवी।

इति शुभम् ।





